RNI : CTHIN/25/A3260

जनता के गोठ

जहां खबर नहीं, असर होता है

▪ अक्टूबर 2025 ▪ मूल्य : 25 रुपए

आत्मनिर्भरता से आत्मगौरव तक का सफर

RNI : CTHIN/25/A3260

जनता के गोठ

वर्ष : 01
अंक : 01
अक्टूबर 2025

संपादक
शुभम वर्मा

सलाहकार संपादक
अनिल पुसदकर

स्थानीय संपादक
पंकज मिश्रा
मनोज वर्मा

ब्यूरो
अंकित आडिल (दुर्ग)

ले-आउट
हिति ग्राफिक्स

कार्यालय
हाउस नंबर 411, देवनगरी, आदिवासी छात्रावास के सामने, शिवशंकर होटल के पीछे, महादेव घाट, रायपुरा, रायपुर (छत्तीसगढ़)

प्रकाशक एवं मुद्रक : शुभम वर्मा द्वारा हाउस नंबर 411, देवनगरी, आदिवासी छात्रावास के सामने, शिवशंकर होटल के पीछे, महादेव घाट, रायपुरा, रायपुर (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं दैनिक भारत भास्कर प्रेस, हाउस नंबर 855, वार्ड नंबर 09, अनंत विहार सड्डू, सारधू, रायपुर से मुद्रित।
संपादक-**शुभम वर्मा**
RNI : CTHIN/25/A3260

अंदर के पन्नों पर

08 जनता के विश्वास से ही सुशासन का दीपोत्सव

12 भूपेश बघेल : संघर्ष से तपे, भरोसे के घेरे में घिरे नेता

38 नेहा मलिक ने बोल्ड अंदाज में...

16 छत्तीसगढ़ महतारी की पीड़ा और अस्मिता का सवाल?
22 सफर अभी खत्म नहीं हुआ..!
26 मंत्रालय में आधार आधारित हाजिरी सिस्टम
30 साइलेंट हार्ट अटैक और कार्डियोफोबिया

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित। प्रकाशित सामग्री के किसी भी प्रकार के उपयोग के पूर्व प्रकाशक-संपादक की अनुमति अनिवार्य है। पत्रिका में प्रकाशित रचना, लेखों, विज्ञापनों एवं अन्य प्रकाशित सामग्रियों के विचारों से प्रकाशक-संपादक की सहमति हो अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद एवं वैधानिक प्रक्रिया केवल रायपुर न्यायालयीन क्षेत्र के अंतर्गत ही मान्य होगी।

जनता की बात जनता के साथ...

जब समाज बदलता है, तो सबसे पहले उसकी आवाज़ बदलती है। और यही आवाज़ किसी लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत होती है। इसी ताकत को सशक्त मंच देने के उद्देश्य से हम लेकर आए हैं 'जनता के गोठ', एक ऐसी मासिक पत्रिका जो न तो सत्ता के दरबार में झुकेगी, न ही जनभावनाओं की अनदेखी करेगी। यह मंच बनेगा उस आवाज़ का, जो भीड़ में दब जाती है, और उस सच्चाई का, जो हकीकत की धूल में छिप जाती है। आज के दौर में जब सूचनाओं की बाढ़ है, तब सत्य की तलाश सबसे कठिन हो गई है। हर स्क्रीन पर खबरें हैं, लेकिन सच्चाई की आवाज़ कहीं खो सी जाती है। 'जनता के गोठ' उसी शोर के बीच संवाद की शांति बनकर उभरेगी। एक ऐसा मंच, जहां खबर सिर्फ़ दी नहीं जाएगी, बल्कि समझी जाएगी, परखी जाएगी और जनता की नज़र से देखी जाएगी। पत्रकारिता का असली धर्म केवल घटनाओं का ब्यौरा देना नहीं, बल्कि समाज को आईना दिखाना है। जहां अच्छाई की झलक हो, तो बुराई की परछाईं भी साफ़ दिखाई दे। हम मानते हैं कि सच्ची पत्रकारिता वही है, जो सत्ता के दबाव से मुक्त और जनता की नब्ज़ से जुड़ी हो। 'जनता के गोठ' उसी आदर्श को जीने का संकल्प है निष्पक्ष, निर्भीक और जनपक्षीय। इस पत्रिका का उद्देश्य केवल खबरों का संग्रह नहीं, बल्कि विचारों का प्रसार है। हम हर उस मुद्दे को उठाएंगे, जो आम जन के जीवन से जुड़ा है। किसान की ज़मीन से लेकर नौजवान के रोजगार तक, गांव की धूल से लेकर शहर की चमक तक, राजनीति की चाल से लेकर समाज की हालत तक। हमारी नज़र में पत्रकारिता का मूल उद्देश्य केवल सवाल उठाना नहीं, बल्कि उन सवालों के जवाब तलाशना भी है। 'जनता के गोठ' समाज के हर तबके के लिए खुला मंच बनेगी। जहां सत्ता की नीतियों का विश्लेषण होगा, विपक्ष की आवाज़ सुनी जाएगी, और जनता की भावनाओं को सबसे ऊपर रखा जाएगा। लोकतंत्र में हर विचार का महत्व है, हर मत की गरिमा है, और हर आवाज़ की गूंज मायने रखती है। आज जब मीडिया का एक बड़ा हिस्सा या तो मनोरंजन में डूबा है या प्रचार में उलझा, तब ऐसी पत्रकारिता की ज़रूरत है, जो जनता के पक्ष में खड़ी हो। जो कह सके कि समाचार केवल सत्ता की भाषा में नहीं, समाज की बोली में भी लिखा जा सकता है। 'जनता के गोठ' उसी बोली, उसी जज़्बे और उसी सच्चाई का मंच बनेगी। हमारा विश्वास है कि पत्रकारिता तब तक जीवित है, जब तक उसमें जनता की आत्मा है। यह पत्रिका उसी आत्मा को पहचानने, समझने और व्यक्त करने की कोशिश है। हम चाहते हैं कि हर नागरिक खुद को इस मंच का हिस्सा महसूस करे, पाठक के रूप में नहीं, बल्कि सहभागी के रूप में। 'जनता के गोठ' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि जनसंवाद का अभियान है। जहां विचारों की टकराहट से सच्चाई की चिंगारी निकलेगी, जहां आलोचना भी होगी और समाधान की राह भी। हम न किसी विचारधारा के बंधक हैं, न किसी सत्ता के साथी। हमारे लिए सबसे बड़ा पक्ष है जनहित। पत्रिका का हर अंक समाज, राजनीति, संस्कृति, कला और लोकजीवन के उस पहलू को छुएगा, जिसे अक्सर मुख्यधारा से नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है। हम उन कहानियों को सामने लाएंगे जो गुमनाम हैं, उन आवाज़ों को सुनेंगे जो मौन हैं, और उन मुद्दों पर बात करेंगे जो महत्वपूर्ण हैं लेकिन मुख्य समाचारों में जगह नहीं पाते। हमारा वादा है कि यह मंच निष्पक्ष रहेगा, निर्भीक रहेगा और जनभावना के प्रति प्रतिबद्ध रहेगा। 'जनता के गोठ' केवल लेखों और रिपोर्टों का संकलन नहीं, बल्कि एक विचार-यात्रा है। जिसका गंतव्य है "सशक्त नागरिक और सच्चा लोकतंत्र। क्योंकि हमारा विश्वास सरल है जब जनता बोलेगी, तभी देश चलेगा। और 'जनता के गोठ' उसी आवाज़ को अमर बनाने की कोशिश है।

- शुभम वर्मा
संपादक

आत्मनिर्भरता से आत्मगौरव तक

साल 2000 में जब छत्तीसगढ़ भारत के नक्शे पर उभरा, तब यह मात्र एक नया प्रदेश नहीं, बल्कि उम्मीदों की नई शुरुआत था। जनभावनाओं से सींचा गया यह प्रदेश अब 25 बरस की यात्रा पूरी कर एक परिपक्व, संवेदनशील और आत्मविश्वासी राज्य के रूप में खड़ा है।

यह वह छत्तीसगढ़ है, जिसने अपनी मेहनत, नीति और समर्पण से 'संसाधनों की धरती' को 'संभावनाओं के राज्य' में बदल दिया। 2001 में 3,999 करोड़ के बजट से शुरू हुआ सफर आज 1.65 लाख करोड़ की ऊँचाइयों तक पहुँच चुका है। सकल घरेलू उत्पाद 25,845 करोड़ से बढ़कर 3.21 लाख करोड़ के पार पहुंच गया है। यह केवल आर्थिक विस्तार नहीं, बल्कि विकास के आत्मविश्वास की कहानी है। पच्चीस वर्ष का छत्तीसगढ़ अब किसी नवोदित राज्य की श्रेणी में नहीं आता। यह एक परिपक्व लोकतंत्र, सशक्त अर्थव्यवस्था और संवेदनशील समाज की कहानी है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में डबल इंजन सरकार ने लोककल्याण को नीति का केंद्र बनाया है। अब लक्ष्य स्पष्ट है हरित ऊर्जा, डिजिटल नवाचार और समान अवसरों वाला "समृद्ध छत्तीसगढ़"। यह सिर्फ 25 साल का उत्सव नहीं, बल्कि 25 करोड़ सपनों की उड़ान है, उस छत्तीसगढ़ की, जो आत्मनिर्भर ही नहीं, आत्मगौरवशाली भी है।

आर्थिक आत्मनिर्भरता की मिसाल

राज्य का GSDP 13 गुना बढ़ा है 25,845 करोड़ से 3,21,945 करोड़ तक। यह वृद्धि दिखाती है कि छत्तीसगढ़ अब केवल संसाधनों पर निर्भर नहीं, बल्कि अपने उत्पादन, उद्योग और सेवा क्षेत्र से आत्मनिर्भर हुआ है।

बजट का स्वर्णिम विस्तार

शुरुआती बजट जहां 3,999 करोड़ रुपये का था, वहीं आज यह 1.65 लाख करोड़ रुपये के पार है। यह प्रशासनिक परिपक्वता, वित्तीय अनुशासन और लोककल्याण के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

औद्योगिक प्रगति, निवेश का नया युग

भिलाई, कोरबा, रायगढ़ और जगदलपुर जैसे औद्योगिक केंद्र आज छत्तीसगढ़ की आर्थिक रीढ़ हैं। 2000 में 30% औद्योगिक योगदान अब 42.4% तक पहुंच चुका है। इस्पात, सीमेंट और बिजली उत्पादन में राज्य अब देश के अग्रणी राज्यों में गिना जाता है।

रोजगार सृजन और अवसरों की बढ़ोतरी

बेरोजगारी दर 3.5% से घटकर 2.5% रह गई है, जबकि महिला श्रम भागीदारी 59.8% तक पहुंच चुकी है। बिहान मिशन और स्वरोजगार योजनाओं ने हजारों महिलाओं और युवाओं को आत्मनिर्भर बनाया है।

कृषि – परंपरा से तकनीक तक

धान के कटोरे के रूप में प्रसिद्ध छत्तीसगढ़ ने कृषि को आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनाया है। किसानों को 3100 प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी, बोनस नीति और किसान सम्मान निधि का लाभ मिला है। वार्षिक कृषि वृद्धि दर 7.8% तक पहुँची है।

सिंचाई का व्यापक विस्तार

2000 में 13.28 लाख हेक्टेयर सिंचित भूमि आज 21.76 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गई है। सौर सुजला योजना ने सौर ऊर्जा से सिंचाई को स्थायित्व और पर्यावरणीय संतुलन दिया है।

शिक्षा का उजाला

राज्य में सरकारी स्कूलों की संख्या 38,050 से बढ़कर 56,615 और शिक्षकों की संख्या 21,000 से बढ़कर 2,78,798 हो गई है। शिक्षा सूचकांक 0.249 से बढ़कर 0.520। यह संकेत है कि अब ज्ञान गांव-गांव पहुंच चुका है।

उच्च शिक्षा में क्रांति

विश्वविद्यालयों की संख्या 4 से बढ़कर 26 हो गई, जिनमें 15 शासकीय और 18 निजी विश्वविद्यालय हैं। 11 मेडिकल कॉलेजों ने स्वास्थ्य शिक्षा को नया आधार दिया है।

डिजिटल शासन और पारदर्शिता

सीजीनेट, मुख्यमंत्री मितान योजना, ई-अस्पताल और जनचौपाल जैसे नवाचारों ने प्रशासन को नागरिकों के द्वार तक पहुंचाया है। शासन अब केवल ऊपर से नहीं, भीतर से जुड़ा है।

महिला शिक्षा और सशक्तिकरण

महिला साक्षरता दर अब 70% से अधिक है। यह सिर्फ शिक्षा का आँकड़ा नहीं, बल्कि समाज के आत्मविश्वास का मापदंड है।

स्वास्थ्य में संवेदना और सशक्तिकरण

2001 में जहां केवल 6 जिला अस्पताल थे, अब 27 हैं। स्वास्थ्य सूचकांक 0.585 से बढ़कर 0.672 हुआ है। शिशु मृत्यु दर 67 से घटकर 38 प्रति हजार हुई है — यह राज्य की संवेदनशील स्वास्थ्य नीति का परिणाम है।

हर घर में उजाला

घरेलू विद्युतीकरण 18% से बढ़कर 100% — यानी अब कोई घर अंधेरे में नहीं। ऊर्जा ही नहीं, उम्मीद भी पहुंची है।

सड़कों से बढ़ती संभावनाएं

राष्ट्रीय राजमार्ग 1,827 किमी से 3,482 किमी, राज्य मार्ग 2,074 किमी से 4,310 किमी, और ग्रामीण सड़कें 28,393 किमी से बढ़कर 1,60,116 किमी — यह 'कनेक्टिविटी से विकास' की मिसाल है।

रेल और हवाई सेवाओं का विस्तार

रायपुर विशाखापटनम एक्सप्रेस मार्ग, बिलासपुर स्मार्ट सिटी मिशन और नए एयर रूट्स ने राज्य को देश के औद्योगिक और वाणिज्यिक नक्शे पर और मजबूत किया है।

खनिज संपदा, आर्थिक रीढ़

कोयला, लौह अयस्क, बॉक्साइट और टिन ने छत्तीसगढ़ को औद्योगिक हब बनाया है। खनिज रॉयल्टी से प्राप्त आय ने सामाजिक योजनाओं को गति दी है।

समाज के हर वर्ग तक विकास

तेंदूपत्ता संग्राहकों की पारिश्रमिक वृद्धि (5,500), महतारी वंदन योजना में 1,000 मासिक सहायता, चरण पादुका योजना और नियद नेल्ला नार जैसी पहलें समाज के सबसे निचले तबके तक पहुंचे कल्याण की मिसाल हैं।

आदिवासी अंचलों का नवजागरण

बस्तर और सरगुजा विकास प्राधिकरणों ने आदिवासी अंचलों को शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार से जोड़ा है। अब बस्तर की पहचान केवल संघर्ष नहीं, बल्कि परिवर्तन से है।

नक्सलवाद पर निर्णायक प्रहार

डेढ़ वर्ष में 435 नक्सली मारे गए और 1,450 ने आत्मसमर्पण किया। विकास की रोशनी अब उन इलाकों तक पहुंच चुकी है, जहां कभी बंदूक की आवाज गूंजती थी।

जनता के विश्वास से ही सुशासन का दीपोत्सव

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी योजनाओं को धरातल पर उतारना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता

दीपावली के पावन अवसर पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय रायगढ़ जिले के लैलूंगा तहसील के ग्राम भुईयांपानी पहुँचे। यहाँ उन्होंने गुरुधाम में आयोजित दीप महोत्सव कार्यक्रम में शामिल होकर अपने आराध्य संत गुरुदेव स्वामी धनपति पंडा जी एवं श्रीमती प्रेमशीला पंडा की प्रतिमाओं के समक्ष नमन कर प्रदेशवासियों के सुख, शांति, समृद्धि और खुशहाली की मंगलकामना की। मुख्यमंत्री ने दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि यह दीपोत्सव हर घर में उजियारा और हर जीवन में सुख, समृद्धि, शांति एवं प्रेम का प्रकाश फैलाए। उन्होंने कहा कि गुरु का आशीर्वाद सदैव हम सब पर बना रहे। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने शिवमंदिर में जाकर शिवलिंग पर जलाभिषेक किया तथा हनुमान मंदिर एवं वटवृक्ष की पूजा-अर्चना भी की। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि यह संतों और प्रदेश की जनता का ही आशीर्वाद है कि एक किसान का बेटा मुख्यमंत्री बना है। उन्होंने बताया कि उनके कार्यकाल के 22 महीनों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी योजनाओं को धरातल पर उतारना उनकी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता रही है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ के लोगों के विकास के लिए राज्य सरकार सुशासन, पारदर्शिता और विकास के संकल्प के साथ कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों को दो वर्षों का बकाया बोनस प्रदान किया गया है। धान खरीदी की सीमा 21 क्विंटल प्रति एकड़ कर दी गई है। धान का मूल्य 3,100 रुपए प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। महतारी वंदन योजना के तहत महिलाओं को प्रतिमाह 1,000 रुपए की आर्थिक सहायता दी जा रही है। ई-गवर्नेंस प्रणाली की शुरुआत हो चुकी है और भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा रही है। भूमिहीन मजदूर सहायता योजना, तेंदूपत्ता खरीदी 5,500 रुपए प्रति मानक बोरा, रामलला दर्शन योजना एवं मुख्यमंत्री तीर्थ-दर्शन योजना जैसी अनेक जनहितकारी योजनाएँ सफलतापूर्वक संचालित की जा रही हैं। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने गुरुधाम में एक करोड़ रुपए की लागत से सर्वसुविधायुक्त भवन का निर्माण, महतारी सदन के लिए 29 लाख रुपए के साथ ही गुरुधाम परिसर में हाईमास्ट लाइट की स्थापना, तालाब का सौंदर्यीकरण, बोर खनन एवं अन्य आवश्यकताओं के लिए घोषणा की। लोकसभा सांसद राधेश्याम राठिया ने उपस्थित सभी लोगों को दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि इस संसार में गुरु से बढ़कर कोई नहीं है। गुरु ही वह प्रकाशस्तंभ हैं जो हमें अंधकारमय जीवन से निकालकर ज्ञान, अनुशासन और नैतिकता के पथ पर अग्रसर करते हैं। गुरु की प्रेरणा ही जीवन में सच्चा आनंद, आत्मिक शांति और सर्वोच्च सुख प्रदान करती है। उनका मार्गदर्शन जीवन को अर्थपूर्ण बनाता है।

हर क्षेत्र में कर रहे विकास

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार पिछड़ा वर्ग के विकास और हितों को लेकर पूरी तरह संवेदनशील और प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि पिछड़ा वर्ग को संवैधानिक अधिकार प्रदान किए गए हैं, जिसके लिए पिछड़ा वर्ग आयोग का गठन भी किया गया है। राज्य सरकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटियों को तीव्र गति से लागू कर रही है। सरकार बनते ही पहली ही कैबिनेट बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत 18 लाख आवासों की स्वीकृति प्रदान की गई। तेंदूपत्ता संग्राहकों की आमदनी बढ़ाने के लिए सरकार ने प्रति मानक बोरा दर को 5500 रुपए कर दिया है। उन्होंने कहा कि विकसित भारत की तर्ज पर वर्ष 2047 तक विकसित छत्तीसगढ़ बनाने के लिए राज्य सरकार संकल्पबद्ध है। उन्होंने लोगों से वोकल फॉर लोकल अपनाने का आग्रह करते हुए कहा कि स्वदेशी वस्तुओं की खरीद से न केवल देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी, बल्कि स्थानीय कारीगरों और उद्यमियों को भी प्रोत्साहन मिलेगा। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि राज्य सरकार नक्सल उन्मूलन की दिशा में तीव्रता से कार्य कर रही है। दो दिन पूर्व ही 210 नक्सलियों ने आत्मसमर्पण कर मुख्यधारा में वापसी की है। जिले में स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार के लिए मेडिकल कॉलेज, प्राकृतिक चिकित्सा एवं फिजियोथेरेपी केंद्र, शासकीय नर्सिंग कॉलेज तथा शासकीय फिजियोथेरेपी कॉलेज की स्थापना की जाएगी, जिससे स्थानीय युवाओं को शिक्षा और रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

उत्तर बस्तर और अबूझमाड़ नक्सलमुक्त

देश में नक्सलवाद के खिलाफ चल रही निर्णायक लड़ाई ने एक ऐतिहासिक मुकाम हासिल किया है। छत्तीसगढ़ के अबूझमाड़ और उत्तर बस्तर जैसे क्षेत्र, जो कभी नक्सल आतंक के गढ़ हुआ करते थे, अब पूरी तरह नक्सलमुक्त घोषित किए जा चुके हैं। यह न केवल भारत की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था की बड़ी सफलता है, बल्कि विकास, विश्वास और संवेदना की नई कहानी भी है। यह परिवर्तन इस बात का प्रमाण है कि बंदूक नहीं, बल्कि संविधान पर विश्वास की शक्ति जीत रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के निरंतर प्रयासों से नक्सलवाद अब अपने अंतिम चरण में है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के नेतृत्व में भारत आज नक्सलवाद के अंत की दहलीज़ पर खड़ा है। उत्तर बस्तर और अबूझमाड़ का नक्सलमुक्त होना यह प्रमाण है कि अब बस्तर भय नहीं, बल्कि विश्वास और विकास की नई पहचान बन चुका है। अक्टूबर महीने में सिर्फ दो दिनों में 258 नक्सलियों का आत्मसमर्पण इस बात का प्रतीक है कि बंदूक नहीं, बल्कि विश्वास की शक्ति जीत रही है। उन्होंने कहा कि बीते 22 महीनों में छत्तीसगढ़ में 477 नक्सली मारे गए, 2110 ने आत्मसमर्पण किया और 1785 गिरफ्तार हुए। ये आंकड़े राज्य को नक्सलमुक्त बनाने के अडिग संकल्प के साक्षी हैं। सरकार की नीति दो टूक है कि हिंसा का कोई स्थान नहीं। जो नक्सली शांति और विकास का मार्ग चुनना चाहते हैं, उनका स्वागत है। लेकिन जो बंदूक उठाकर समाज में आतंक फैलाने की कोशिश करेंगे, उन्हें सुरक्षा बलों की सख़्त कार्रवाई का सामना करना पड़ेगा। 31 मार्च 2026 तक छत्तीसगढ़ को पूरी तरह नक्सलमुक्त बनाने का लक्ष्य अब बहुत निकट है। यह परिवर्तन राज्य सरकार की "नक्सलवादी आत्मसमर्पण एवं पुनर्वास नीति 2025" तथा "नियद नेल्ला नार योजना" की सफलता का प्रत्यक्ष परिणाम है। डबल इंजन सरकार की संवेदनशील नीतियों, बस्तर में लगातार स्थापित हो रहे सुरक्षा शिविरों और वनांचलों में शासन के प्रति बढ़ते विश्वास ने इस सकारात्मक परिवर्तन को संभव बनाया है। अब तक नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में 64 नए सुरक्षा कैंप स्थापित किए जा चुके हैं, जिससे न केवल सुरक्षा सुदृढ़ हुई है, बल्कि विकास और विश्वास की किरण भी हर गांव तक पहुँची है।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने आत्मसमर्पण करने वाले सभी नक्सलियों की सराहना करते हुए कहा कि यह कदम उनके बेहतर भविष्य और देश की एकता के प्रति समर्पण का प्रतीक है। उन्होंने सभी नक्सलियों से अपील की कि वे हिंसा का रास्ता छोड़कर मुख्यधारा में लौटें और देश की प्रगति में सहभागी बनें।मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि हमारे वीर सुरक्षाबलों के अदम्य साहस और बलिदान को नमन करते हुए कहा कि उनके समर्पण से ही आज बस्तर भयमुक्त हुआ है और शांति की राह पर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि अबूझमाड़ और उत्तर बस्तर नक्सल आतंक से पूर्णतः मुक्त हो चुके हैं, जबकि दक्षिण बस्तर में यह लड़ाई अपने निर्णायक चरण में है। "नियद नेल्ला नार" जैसी योजनाओं ने बस्तर में संवाद, विकास और संवेदना की नई धरती तैयार की है। मुख्यमंत्री ने सभी नक्सलियों से अपील की है कि हिंसा की राह अंतहीन पीड़ा देती है, जबकि आत्मसमर्पण जीवन को एक नई दिशा देते हुए एक नई शुरुआत का रास्ता खोलता है। अपनी मातृभूमि के भविष्य और अपने परिवारों के उज्ज्वल कल के लिए हथियार त्यागें और विकास की रोशनी में कदम रखें। उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि बस्तर के युवा डॉक्टर, इंजीनियर, डिप्टी कलेक्टर और कलेक्टर बनकर पूरे छत्तीसगढ़ की सेवा करें। यह हम सभी की जिम्मेदारी है कि युवा नक्सलवाद से न जुड़ें और जो जुड़ चुके हैं, वे आत्मसमर्पण कर मुख्यधारा में लौटें। जहां-जहां नक्सलवाद समाप्त हुआ है, वहां छत्तीसगढ़ सरकार तेजी से विकास कार्य कर रही है और लोगों को शासकीय योजनाओं से लाभान्वित कर रही है।

बगिया में लगा जनता दरबार

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने अपने गृह ग्राम बगिया में लोगों से दीपावली पर्व के अवसर पर मुलाकात कर उन्हें दीप पर्व की शुभकामनाएं और बधाई दी। मुख्यमंत्री को दीप पर्व की बधाई देने के लिए बड़ी संख्या में लोग उनके गृह ग्राम बगिया पहुंचे थे। इस आत्मीय मुलाकात के दौरान मुख्यमंत्री ने लोगों से उनकी समस्याएं भी सुनी और उनके आवेदन भी लिये। उन्होंने इस मौके पर मौजूद जिला प्रशासन के अधिकारियों को उनके विभागों से संबंधित आवेदनों का तत्परता से निराकरण करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने ग्रामीणों, महिलाओं, किसानों, छात्रों और विभिन्न सामाजिक संगठनों से एक-एक कर मुलाकात की और दीप पर्व की शुभेच्छाओं के अदान-प्रदान के दौरान लोगों की समस्याएं भी सुनी। मुख्यमंत्री ने लोगों से मिले आवेदनों के संबंध में अधिकारियों से कहा कि सभी आवेदनों का समयबद्ध समाधान किया जाए। मुलाकात के दौरान स्वास्थ्य, शिक्षा, बिजली, सड़क, जनसुविधाओं और विभिन्न योजनाओं से संबंधित आवेदन लोगों ने मुख्यमंत्री को दिए।

हथियार छोड़कर समाज की मुख्यधारा में लौटे 210 नक्सलियों ने थामी संविधान की पुस्तक

210 नक्सलियों का 153 हथियारों के साथ सरेंडर

जगदलपुर के पुलिस लाइन परिसर में एक साथ 210 नक्सलियों का 153 हथियारों के साथ आत्मसमर्पण हुआ, तो उनका स्वागत पारंपरिक मांझी-चालकी विधि से किया गया। उन्हें संविधान की प्रति और शांति, प्रेम एवं नए जीवन का प्रतीक लाल गुलाब भेंट कर सम्मानित किया गया। मांझी-चालकी प्रतिनिधियों ने कहा कि बस्तर की परंपरा सदैव प्रेम, सहअस्तित्व और शांति का संदेश देती रही है। जो साथी अब लौटे हैं, वे इस परंपरा को नई शक्ति देंगे और समाज में विश्वास की नींव को और मजबूत करेंगे। सरेंडर करने वाले नक्सलियों ने संविधान की शपथ लेकर लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की। उन्होंने प्रतिज्ञा ली कि वे अब हिंसा के बजाय विकास और राष्ट्रनिर्माण की दिशा में योगदान देंगे। कार्यक्रम के दौरान पुलिस विभाग द्वारा आत्मसमर्पित माओवादियों को पुनर्वास सहायता राशि, आवास और आजीविका योजनाओं की जानकारी दी गई। राज्य शासन इन युवाओं को स्वरोजगार, कौशल विकास और शिक्षा से जोड़ने के लिए प्रतिबद्ध है, ताकि वे आत्मनिर्भर और सम्मानजनक जीवन जी सकें। डीजीपी अरूण देव गौतम ने कहा कि पूना मारगेम केवल नक्सलवाद से दूरी बनाने का प्रयास नहीं, बल्कि जीवन को नई दिशा देने का अवसर है। जो आज लौटे हैं, वे बस्तर में शांति, विकास और विश्वास के दूत बनेंगे। उन्होंने आत्मसमर्पित कैडरों से समाज निर्माण में अपनी ऊर्जा लगाने का आह्वान किया। इस अवसर पर एडीजी (नक्सल ऑपरेशन्स) विवेकानंद सिन्हा, सीआरपीएफ बस्तर रेंज प्रभारी, कमिश्नर डोमन सिंह, बस्तर रेंज आईजी सुंदरराज पी., कलेक्टर हरिस एस., बस्तर संभाग के सभी पुलिस अधीक्षक, वरिष्ठ अधिकारी और सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

शांति, विकास और विश्वास के नए युग की शुरुआत

पिछले 22 महीनों में छत्तीसगढ़ में 477 नक्सली मारे गए हैं। वहीं 2110 ने आत्मसमर्पण किया है और 1785 गिरफ्तार किए जा चुके हैं। ये आंकड़े छत्तीसगढ़ को नक्सलमुक्त बनाने के अडिग संकल्प के साक्षी हैं। केंद्र और राज्य सरकार की व्यापक नक्सल उन्मूलन नीति और शांति, संवाद एवं विकास पर केंद्रित सतत प्रयासों के परिणामस्वरूप बस्तर संभाग में नक्सल विरोधी मुहिम को ऐतिहासिक सफलता मिल रही है। इसी कड़ी में पूना मारगेम पुनर्वास से पुनर्जीवन कार्यक्रम के अंतर्गत दण्डकारण्य क्षेत्र के 210 नक्सलियों ने हिंसा का मार्ग छोड़कर समाज की मुख्यधारा में लौटने का फैसला किया। इतनी बड़ी संख्या में नक्सलियों का ये आत्मसमर्पण विश्वास, सुरक्षा और विकास की दिशा में बस्तर की नई सुबह का संकेत है।

लंबे समय से नक्सली गतिविधियों से प्रभावित अबूझमाड़ और उत्तर बस्तर क्षेत्र में यह ऐतिहासिक घटनाक्रम नक्सल उन्मूलन अभियान के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ के रूप में दर्ज हो गया। राज्य शासन द्वारा अपनाई गई व्यापक नक्सल उन्मूलन नीति ने क्षेत्र में स्थायी शांति की मजबूत नींव रखी है। पुलिस, सुरक्षा बलों, स्थानीय प्रशासन, सामाजिक संगठनों और सजग नागरिकों के समन्वित प्रयासों से हिंसा की संस्कृति को संवाद और विकास की संस्कृति में परिवर्तित किया जा सका है। ऐसा पहली बार हुआ, जब नक्सल विरोधी अभियान के इतिहास में इतनी बड़ी संख्या में वरिष्ठ नक्सली कैडरों ने एक साथ सरेंडर किया हो। आत्मसमर्पण करने वालों में एक सेंट्रल कमेटी सदस्य, चार डीकेएसजेडसी सदस्य, 21 डिविजनल कमेटी सदस्य सहित अनेक वरिष्ठ माओवादी नेता शामिल हैं। इन कैडरों ने कुल 153 अत्याधुनिक हथियार—जिनमें AK-47, SLR, INSAS रायफल और LMG शामिल हैं, समर्पित किए हैं। यह केवल हथियारों का समर्पण नहीं, बल्कि हिंसा और भय के युग का प्रतीकात्मक अंत है। एक ऐसी घोषणा, जो बस्तर में शांति और भरोसे के युग की शुरुआत का संकेत देती है। मुख्यधारा में लौटने वाले प्रमुख माओवादी नेताओं में सीसीएम रूपेश उर्फ सतीश, डीकेएसजेडसी सदस्य भास्कर उर्फ राजमन मांडवी, रनीता, राजू सलाम, धन्नू वेत्ती उर्फ संतू, आरसीएम रतन एलम सहित कई वांछित और इनामी कैडर शामिल हैं। इन सभी ने संविधान पर आस्था व्यक्त करते हुए लोकतांत्रिक व्यवस्था में सम्मानजनक जीवन जीने का संकल्प लिया।

नीतियों और भरोसे से आया बदलाव: साय

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने बस्तर में 210 नक्सलियों के सरेंडर को राज्य ही नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए एक ऐतिहासिक क्षण बताया। उन्होंने कहा कि जो युवा कभी माओवाद के झूठे विचारधारा के जाल में फंसे थे, उन्होंने आज संविधान, लोकतंत्र और विकास की मुख्यधारा में लौटने का संकल्प लिया है। ये पूरे छत्तीसगढ़ और देश के लिए ऐतिहासिक है। जिन युवाओं ने वर्षों तक अंधेरी राहों पर भटककर हिंसा का मार्ग चुना, उन्होंने आज अपने कंधों से बंदूक उतारकर संविधान को थामा है। यह न केवल आत्मसमर्पण का क्षण है, बल्कि विश्वास, परिवर्तन और नये जीवन की शुरुआत है। उन्होंने कहा कि बस्तर में बंदूकें छोड़कर सुशासन पर विश्वास जताने वाले इन युवाओं से मेरी मुलाकात मेरे जीवन के सबसे भावनात्मक और संतोष देने वाले पलों में से एक रही। यह दृश्य इस बात का प्रमाण है कि बदलाव नीतियों और विश्वास से आता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य शासन की नक्सलवादी आत्मसमर्पण एवं पुनर्वास नीति 2025 नियद नेल्ला नार योजना और पूना मारगेम, पुनर्वास से पुनर्जीवन जैसी योजनाएँ विश्वास और परिवर्तन का आह्वान हैं। इन्हीं नीतियों के प्रभाव से नक्सल प्रभावित इलाकों में बंदूक छोड़कर लोग शासन की विश्वास और विकास की प्रतिज्ञा को स्वीकार कर रहे हैं।

तय समय से पहले खत्म होगा नक्सलवाद: विजय शर्मा

डिप्टी सीएम विजय शर्मा ने बताया कि केंद्रीय गृह मंत्री ने लक्ष्य तय किया है कि 31 मार्च 2026 तक नक्सलवाद समाप्त किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह मान लिया जाए कि तय समय में यह लक्ष्य पूरा कर लिया जाएगा। पुनर्वास नीति के तहत उन्होंने कहा कि कोई नक्सली माता-पिता के सुख से वंचित है, तो सरकार मेडिकल ट्रीटमेंट तक की सुविधा देगी। उन्होंने बताया कि इस सरेंडर में माड़ डिवीजन की पूरी कमेटी आई है। गढ़चिरौली वाले वापस गढ़चिरौली लौट गए हैं। केशकाल यूनिट शेष है। कंपनी-1, 10 पूरी तरह सरेंडर कर चुके हैं और कंपनी-5 में 1-2 को छोड़कर सभी आत्मसमर्पण कर चुके हैं। कम्युनिकेशन टीम और जोनल डॉक्टर टीम पूरी तरह सरेंडर कर चुकी है। उत्तर-पश्चिम ज़ोन पूरी तरह खाली हो चुका है।

नक्सलमुक्त हुआ अबूझमाड़

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि उत्तर बस्तर और अबूझमाड़ का नक्सलमुक्त होना यह प्रमाण है कि अब बस्तर भय नहीं, बल्कि विश्वास और विकास की नई पहचान बन चुका है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के नेतृत्व में भारत आज नक्सलवाद के अंत की दहलीज़ पर खड़ा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि दो दिनों में 258 नक्सलियों का आत्मसमर्पण इस बात का प्रतीक है कि बंदूक नहीं, बल्कि विश्वास की शक्ति जीत रही है। उन्होंने कहा कि 31 मार्च 2026 तक छत्तीसगढ़ को पूरी तरह नक्सलमुक्त बनाने का लक्ष्य अब बहुत निकट है। यह परिवर्तन राज्य सरकार की "नक्सलवादी आत्मसमर्पण एवं पुनर्वास नीति 2025" तथा "नियद नेल्ला नार योजना" की सफलता का प्रत्यक्ष परिणाम है। डबल इंजन सरकार की संवेदनशील नीतियों, बस्तर में लगातार स्थापित हो रहे सुरक्षा शिविरों और वनांचलों में शासन के प्रति बढ़ते विश्वास ने इस सकारात्मक परिवर्तन को संभव बनाया है। उन्होंने कहा कि अब तक नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में 64 नए सुरक्षा कैंप स्थापित किए जा चुके हैं, जिससे न केवल सुरक्षा सुदृढ़ हुई है, बल्कि विकास और विश्वास की किरण भी हर गांव तक पहुंची है।

देवजी और हिडमा बचे?

सुरक्षा बलों की ओर से चलाए जा रहे नक्सल ऑपरेशन और सरकार की कोशिशों से नक्सली या तो एनकाउंटर में मारे जा रहे हैं। गिरफ्तार किए जा रहे हैं। या फिर वे खुद सरेंडर कर रहे हैं। नक्सलियों के तमाम बड़े लीडरों का सफाया हो गया है। अब उनके गिनती में ही बड़े नेता बचे हैं। अब सवाल है नक्सलियों के अन्य सबसे खतरनाक कैडरों में शामिल पोलित ब्यूरो सदस्य देवजी, केंद्रीय समिति सदस्य हिडमा और संग्राम समेत वरिष्ठ नक्सलियों में बरसे देवा और पप्पा राव का क्या होगा, जिन्होंने आत्मसमर्पण करने का विरोध किया है। इनका कहना है कि वह किसी भी सूरत में सरकार के सामने घुटने नहीं टेकेंगे, चाहे जो हो जाए। हालांकि, सूत्रों का कहना है कि कोशिश की जा रही है कि नक्सलियों के यह टॉप लीडर भी अगर बिना खून बहाए आत्मसमर्पण कर दें तो अच्छा ही होगा। वरना, सुरक्षा बलों का एक्शन होना तो तय ही है।

भूपेश बघेल : संघर्ष से तपे, भरोसे के घेरे में घिरे नेता

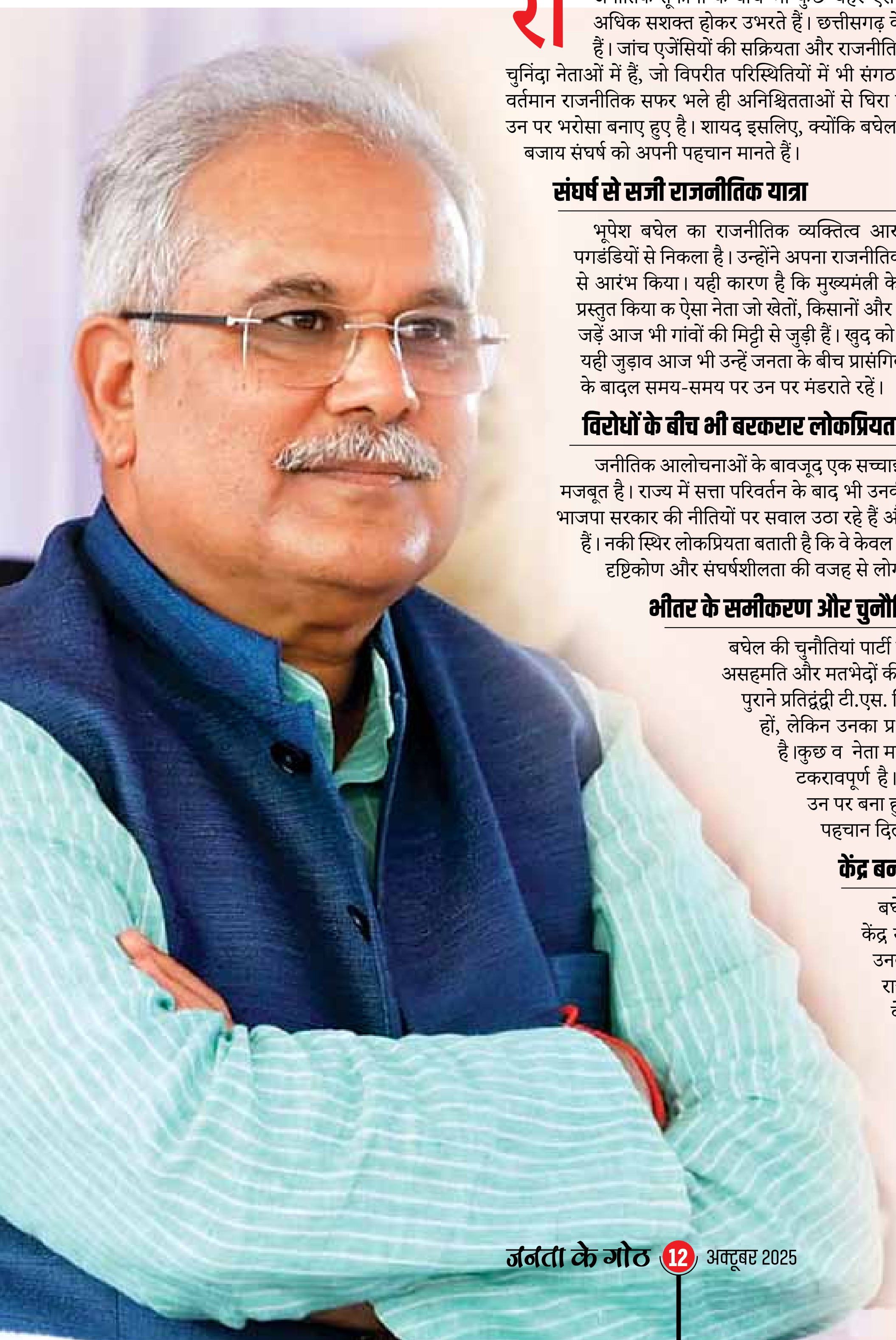

राजनीतिक तूफानों के बीच भी कुछ चेहरे ऐसे होते हैं जो दबाव में झुकने के बजाय और अधिक सशक्त होकर उभरते हैं। छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल उन्हीं में से एक हैं। जांच एजेंसियों की सक्रियता और राजनीतिक आरोपों के बाद भी वे आज कांग्रेस के उन चुनिंदा नेताओं में हैं, जो विपरीत परिस्थितियों में भी संगठन के लिए ढाल बनकर खड़े रहते हैं। उनका वर्तमान राजनीतिक सफर भले ही अनिश्चितताओं से घिरा हो, पर यह साफ है कि पार्टी नेतृत्व अब भी उन पर भरोसा बनाए हुए है। शायद इसलिए, क्योंकि बघेल उन नेताओं की श्रेणी में आते हैं जो सत्ता के बजाय संघर्ष को अपनी पहचान मानते हैं।

संघर्ष से सजी राजनीतिक यात्रा

भूपेश बघेल का राजनीतिक व्यक्तित्व आरामदायक रास्तों से नहीं, बल्कि संघर्ष की पगडंडियों से निकला है। उन्होंने अपना राजनीतिक जीवन किसान आंदोलनों और ग्रामीण मुद्दों से आरंभ किया। यही कारण है कि मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने खुद को मुख्यमंत्री के रूप में प्रस्तुत किया क ऐसा नेता जो खेतों, किसानों और आम जनता की आवाज बनकर उभरा। नकी जड़ें आज भी गांवों की मिट्टी से जुड़ी हैं। खुद को किसान पुत्र कहने में वे गर्व महसूस करते हैं। यही जुड़ाव आज भी उन्हें जनता के बीच प्रासंगिक बनाए रखता है, भले ही जांच और आरोपों के बादल समय-समय पर उन पर मंडराते रहें।

विरोधों के बीच भी बरकरार लोकप्रियता

जनीतिक आलोचनाओं के बावजूद एक सच्चाई यह है कि भूपेश बघेल का जनाधार अब भी मजबूत है। राज्य में सत्ता परिवर्तन के बाद भी उनकी स्वीकार्यता में कमी नहीं आई। वे लगातार भाजपा सरकार की नीतियों पर सवाल उठा रहे हैं और विपक्ष की राजनीति को सक्रिय बनाए हुए हैं। नकी स्थिर लोकप्रियता बताती है कि वे केवल पद पर नहीं, बल्कि अपने संवाद, राजनीतिक दृष्टिकोण और संघर्षशीलता की वजह से लोगों के बीच टिके हुए हैं।

भीतर के समीकरण और चुनौतियाँ

बघेल की चुनौतियां पार्टी के बाहर नहीं, बल्कि भीतर भी हैं। कांग्रेस में असहमति और मतभेदों की फुसफुसाहटें हमेशा से मौजूद रही हैं। उनके पुराने प्रतिद्वंद्वी टी.एस. सिंहदेव ले अब दिल्ली की राजनीति में सक्रिय हों, लेकिन उनका प्रभाव प्रदेश संगठन में अब भी महसूस होता है।कुछ व नेता मानते हैं कि बघेल का कार्यशैली केंद्रीकृत और टकरावपूर्ण है। फिर भी, पार्टी नेतृत्व का भरोसा लगातार उन पर बना हुआ है और यही उन्हें बाकी नेताओं से अलग पहचान दिलाता है।

केंद्र बनाम राज्य : नई सियासी जंग

बघेल के राजनीतिक अध्याय का नया दौर केंद्र सरकार से टकराव के इर्द-गिर्द घूम रहा है। उनका आरोप है कि जांच एजेंसियों का इस्तेमाल राजनीतिक प्रतिशोध के लिए किया जा रहा है। वे इसे लोकतांत्रिक असहमति की आवाज को दबाने की कोशिश के रूप में देखते हैं। उनके समर्थकों का कहना है कि भाजपा का लक्ष्य छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की संगठनात्मक शक्ति को कमजोर करना है। किन बघेल इस संघर्ष को अपनी साख की जंग के रूप में लड़ रहे हैं।

नई जिम्मेदारी, पुराना भरोसा

हाल में कांग्रेस ने भूपेश बघेल को बिहार विधानसभा चुनाव का ऑब्जर्वर नियुक्त किया है। यह सिर्फ एक संगठनात्मक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक राजनीतिक संदेश भी है कि सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा आज भी बघेल को पार्टी का भरोसेमंद चेहरा मानते हैं। ह पहली बार नहीं है जब पार्टी ने उन पर इतना भरोसा दिखाया हो। साल 2013 में हार के बाद उन्हें प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बनाया गया, जब संगठन बेहद कमजोर था। इसके बाद 2018 में पंद्रह साल बाद छत्तीसगढ़ में कांग्रेस ने ऐतिहासिक जीत दर्ज की। मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने प्रशासन, संगठन, मीडिया और किसान नीतियों सभी मोर्चों पर पार्टी को मजबूत किया। फिर साल 2022 में यूपी विधानसभा चुनाव में वे प्रियंका गांधी के साथ सीनियर ऑब्जर्वर के रूप में भी सक्रिय रहे। इन घटनाओं की श्रृंखला बताती है कि पार्टी उन्हें सिर्फ क्षेत्रीय नेता नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर का रणनीतिकार मानती है।

राजनीतिक तूफानों के बीच कायम कद

आज जब भूपेश बघेल के चारों ओर जांच, विवाद और राजनीतिक तूफान हैं, तब भी वे डटे हुए हैं। यह दौर उनकी राजनीति का सार यही है कि संघर्ष ही स्थायित्व देता है। ह दौर निश्चित ही चुनौती का है, लेकिन हर चुनौती उनके लिए नया अवसर भी बनती रही है। वे जानते हैं कि राजनीति उनके लिए मंजिल नहीं बल्कि एक निरंतर यात्रा है, जिसमें हर मोड़ पर भरोसे की डोर कसकर थामे रहना ही उनकी सबसे बड़ी ताकत है।

जनसुविधा की दिशा में हुआ बड़ा सुधार

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार "सरल शासन-सुशासन" की दिशा में लगातार नवाचार कर रही है। पंजीयन विभाग की यह पहल उसी श्रृंखला का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य नागरिकों को सुविधाजनक, पारदर्शी और समयबद्ध सेवा प्रदान करना है। ऋण पुस्तिका की अनिवार्यता समाप्त करना न केवल प्रक्रिया को सरल बनाता है, बल्कि यह प्रशासनिक जवाबदेही और जनविश्वास को भी सशक्त बनाता है। इस निर्णय से अब नागरिकों को अनावश्यक दस्तावेज़ प्रस्तुत करने की बाध्यता से मुक्ति मिलेगी। रजिस्ट्री प्रक्रिया में समय और धन दोनों की उल्लेखनीय बचत होगी तथा दफ्तरों, पटवारी और तहसील कार्यालयों के चक्कर लगाने की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी। इससे न केवल भ्रष्टाचार की संभावनाओं पर पूर्ण विराम लगेगा, बल्कि पंजीयन प्रणाली और अधिक पारदर्शी, त्वरित तथा जवाबदेह बनेगी, जो सुशासन और नागरिक सुविधा की दिशा में एक बड़ा कदम है। राज्य सरकार ने इस निर्णय के माध्यम से यह स्पष्ट संदेश दिया है कि शासन केवल एक नहीं, बल्कि अपने नागरिकों के जीवन और उत्सवों में सहभागी एक आत्मीय परिवार है। यह कदम पंजीयन व्यवस्था में सुधार का प्रतीक ही नहीं, बल्कि दिवाली पर सुशासन और पारदर्शिता की नई रोशनी भी है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की पहल और वित्त एवं पंजीयन मंत्री ओपी चौधरी के निर्देश पर छत्तीसगढ़ पंजीयन विभाग ने एक महत्वपूर्ण जनहितैषी निर्णय लेते हुए कृषि भूमि की खरीदी-बिक्री (रजिस्ट्री) के लिए ऋण पुस्तिका (किसान किताब) प्रस्तुत करने की अनिवार्यता समाप्त कर दी है। यह निर्णय किसानों और आम नागरिकों दोनों के लिए बड़ी राहत लेकर आया है। अब रजिस्ट्री की प्रक्रिया और अधिक सरल, पारदर्शी और भ्रष्टाचार मुक्त होगी।

प्रदेश सरकार का उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को सरल, पारदर्शी और त्वरित सेवाएं प्रदान करना है। सुशासन, सरलता और विश्वास की दिशा में सरकार लगातार फैसले ले रही है। कृषि भूमि की रजिस्ट्री के लिए ऋण पुस्तिका की अनिवार्यता समाप्त करना इसी दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। यह निर्णय किसानों और आम नागरिकों दोनों के लिए राहतकारी सिद्ध होगा तथा पंजीयन प्रक्रिया को पूर्णतः डिजिटल, भ्रष्टाचार-मुक्त और जवाबदेह बनाएगा। उन्होंने कहा कि शासन केवल व्यवस्था नहीं, बल्कि अपने नागरिकों के जीवन और उत्सवों में सहभागी एक आत्मीय परिवार है। दिवाली के अवसर पर यह निर्णय जनता के प्रति इसी आत्मीयता और सुशासन की भावना का प्रतीक है।

-विष्णु देव साय, मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में शासन की प्राथमिकता जनता के लिए प्रशासनिक प्रक्रियाओं को अधिक सरल, त्वरित और पारदर्शी बनाना है। कृषि भूमि की रजिस्ट्री में ऋण पुस्तिका की अनिवार्यता समाप्त करना इसी दिशा में एक ऐतिहासिक सुधार है।राज्य सरकार ने तकनीकी एकीकरण और डिजिटल सत्यापन के माध्यम से पंजीयन प्रक्रिया को पूरी तरह ऑनलाइन बना दिया है, जिससे अब न केवल समय और धन की बचत होगी बल्कि भ्रष्टाचार की संभावनाएँ भी समाप्त होंगी। यह निर्णय किसानों और आम नागरिकों दोनों के लिए राहत देने वाला है और यह दर्शाता है कि सरकार सुशासन को व्यवहार में उतारने के लिए निरंतर ठोस कदम उठा रही है।

-ओपी चौधरी, वित्त एवं पंजीयन मंत्री

युवाओं को रोजगार दिलाना पहली प्राथमिकता: टंक राम वर्मा

स्वामी आत्मानंद उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बलौदाबाज़ार में जिला प्रशासन की ओर से भव्य रोजगार मेले का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रदेश के राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा और कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार मंत्री गुरु खुशवंत साहेब शामिल हुए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का विजन है कि प्रदेश के प्रत्येक युवा को रोजगार मिले। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार का प्रयास है कि कॉलेज की पढ़ाई पूरी करते ही युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए सरकार संकल्पित है। कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार मंत्री गुरु खुशवंत साहेब ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि सफलता का एकमात्र रास्ता कड़ी मेहनत है। उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ़ सरकार युवाओं के सुरक्षित भविष्य की जिम्मेदारी लेकर सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ा रही है। उन्होंने कहा कि तकनीकी शिक्षा को मजबूत बनाने के लिए प्रदेश में साढ़े 13 एकड़ में एआई हब का निर्माण किया जाएगा, जिससे युवाओं को नई तकनीकी सुविधाओं का लाभ मिलेगा। साथ ही उन्होंने शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज स्थित आई-हब लैब की भी जानकारी युवाओं के साथ साझा की। रोजगार मेले में हम होंगे कामयाब अभियान के तहत 60 तथा जिला रोजगार कार्यालय के माध्यम से 15, इस प्रकार कुल 75 युवाओं को ऑफर लेटर प्रदान किए गए। मेले में कुल 1458 पदों के विरुद्ध 1300 से अधिक आवेदन प्राप्त हुए, जिनके आधार पर युवाओं को उनकी योग्यता व रुचि के अनुरूप रोजगार उपलब्ध कराया जाएगा। इस अवसर पर कलेक्टर दीपक सोनी, जिला पंचायत अध्यक्ष आकांक्षा जायसवाल, नगर पालिका अध्यक्ष अशोक जैन, जनपद अध्यक्ष सुलोचना यादव, भारत स्काउट गाइड के अध्यक्ष विजय केशरवानी सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि और युवा उपस्थित रहे।

योग से विश्व कल्याण की ओर भारत

न्यू सर्किट हाऊस रायपुर के कन्वेंशन हाल में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग कार्यशाला 2025 में भारतीय संस्कृति, परंपरा और योग की प्राचीन विद्या की अद्भुत झलक देखने को मिली। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित राजस्व मंत्री टंक राम वर्मा ने कहा कि योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि आत्मिक शांति और वैश्विक समरसता का मार्ग है। उन्होंने कहा कि योग को जीवन का हिस्सा बनाकर हम व्यसनमुक्त, स्वस्थ और समरस समाज का निर्माण कर सकते हैं। उन्होंने इस आयोजन को एक “आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संगम” बताते हुए कहा कि यह कार्यशाला आने वाली पीढ़ियों को भारतीय ज्ञान परंपरा और स्वास्थ्य के मूल्यों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। मंत्री टंकराम वर्मा ने कहा कि योग भारतीय संस्कृति की अमूल्य उपहार है, जो शरीर, मन और आत्मा को संतुलित कर जीवन में सकारात्मकता लाता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों से योग को अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिली है, जिस पर हर भारतीय को गर्व है। उन्होंने कहा कि आज की कार्यशाला ‘योगा फॉर वन अर्थ, वन हेल्थ’ थीम के अनुरूप “एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य” के वैश्विक संकल्प को मजबूत करने का अवसर प्रदान करती है। योग के माध्यम से हम न केवल अपने शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं, बल्कि समाज और पर्यावरण में संतुलन स्थापित कर विश्व कल्याण की दिशा में भी अग्रसर हो सकते हैं। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने विविध योगासन, ध्यान और प्राणायाम के माध्यम से स्वास्थ्य लाभों का अनुभव किया। विशेषज्ञों ने आधुनिक तकनीकों के साथ योग के वैज्ञानिक पहलुओं पर भी विस्तार से चर्चा की। अंत में मंत्री टंक राम वर्मा ने इस सफल कार्यशाला के लिए बधाई देते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ की पावन धरती, जहां मां कौशल्या जैसी महान माताएं जन्मीं, वहां से योग और संस्कृति के माध्यम से विश्व को शांति और स्वास्थ्य का संदेश देना गर्व का विषय है।

जनता की दहलीज़ पर राजस्व-सेवा

छत्तीसगढ़ के राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा ने सिमगा विकासखंड के सुहेला, रावन और झीपन ग्रामों में करोड़ों रूपए के निर्माण कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन किया। कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण के रूप में सुहेला में 71.12 लाख रूपए की लागत से निर्मित नवीन तहसील भवन का लोकार्पण किया गया, जिससे क्षेत्र के किसानों और आम नागरिकों को राजस्व से जुड़ी सेवाएँ अब अधिक सुगमता से प्राप्त होंगी। राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि गरीबों-किसानों की समस्याओं और पीड़ा के संवेदनशील समाधान में कोई लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। कलेक्टर दीपक सोनी ने कहा कि नवीन भवन से राजस्व प्रकरणों के त्वरित निराकरण में गति आएगी। साथ ही आमजन जिला मुख्यालय के संपर्क केंद्र का भी उपयोग कर सकेंगे। कार्यक्रम के दौरान मंत्री टंकराम ने ग्राम झीपन में तालाब सौन्दर्यीकरण और महतारी सदन हेतु 15-15 लाख रूपए की घोषणा की। इसके अतिरिक्त उन्होंने ग्राम रावन में 50 लाख रूपए की लागत से आयुर्वेदिक अस्पताल से बावा देव तक निर्मित गौरव पथ का लोकार्पण,10 लाख रूपए की लागत से आयुर्वेदिक अस्पताल में बाउंड्रीवाल,हायर सेकंडरी स्कूल रावन में 10 लाख रूपए की लागत से क्रांक्रीटीकरण कार्य का भूमिपूजन किया। इसी तरह ग्राम झीपन में प्रार्थना शेड और स्काउट-गाइड भवन में बाउंड्रीवाल निर्माण का लोकार्पण,कुर्मी समाज के सामुदायिक भवन में अतिरिक्त कक्ष निर्माण हेतु भूमिपूजन किया गया।

स्वछता दीदियों का सम्मान

राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा ने बलौदाबाजार पुरानी मण्डी परिसर स्थित ऐतिहासिक गांधी स्मृति स्थल में महात्मा गांधी के आगमन एवं दलित उत्थान के सन्देश के शिलालेख को अनावरण किया। उन्होंने जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों के साथ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री स्व. लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर उनके छायाचित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित कर उन्हें नमन किया। इस अवसर पर स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा अंतर्गत परिसर में वृक्षारोपण किया एवं स्वच्छता की शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी की स्वच्छता के संदेश को घर-घर पहुँचाना है। इसके साथ ही स्वछता दीदियों को सम्मानित भी किया गया। मंत्री टंकराम वर्मा ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी क़ा सन 1933 में इस मण्डी परिसर में आगमन हुआ था और उन्होने यहां स्थित कुंए के पानी को दलितों को पिलाकर छुआ-छूत मिटाने का सन्देश दिया था। ऐसे ऐतिहासिक स्थल को सहेजना अत्यंत आवश्यक है ताकि आने वाली पीढ़ी इतिहास को जान सके। गांधी स्मृति स्थल जिले की अमूल्य धरोहर है। इसे सहेजने और सांवरने का काम जिला प्रशासन एवं नगर पालिका द्वारा किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि 17 सितम्बर से शुरू हुए स्वच्छता ही सेवा पखावड़ा का समापन इस ऐतिहासिक स्थल पर हो रहा है यह भी गौरव का दिन है। हम सब मिलकर बलौदाबाजार को मॉडल जिला बनाएंगे। मंत्री टंकराम वर्मा ने जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों स्वच्छता की शपथ दिलाई। कलेक्टर ने कहा कि गांधी स्मृति स्थल को संरक्षित व सहजने में सबकी सहभागिता जरुरी है। इस स्थल को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने जिला प्रशासन कार्य कर रहा है। नगरपालिका अध्यक्ष अशोक जैन ने कहा कि महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर देश को आजादी दिलाई थी। सबके सहयोग से इस गांधी स्मृति स्थल को सजाने-संवारने का कार्य किया जाएगा। गांधी स्मृति स्थल की साफ-सफाई, रंग़-रोगन,लाईट लगाई गई है। कुंआ की सफाई व लोहे की जाली लगाई गई है। इसी तरह आगे भी कार्य किया जाएगा। कार्यक्रम को पुलिस अधीक्षक भावना गुप्ता ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर पूर्व विधायक डॉ. सनम जांगड़े, प्रमोद शर्मा, भारत स्काउट गाइड के राज्य उपाध्यक्ष विजय केशरवानी, नगर पालिका उपाध्यक्ष जितेंद्र महले, गौ सेवा आयोग के सदस्य योगेश अग्रवाल सहित अन्य जनप्रतिनिधि, अधिकारी-कर्मचारी एवं नगरवासी उपस्थित थे।

विकसित भारत की रीढ़ हैं किसान: वर्मा

सारंगढ़ कृषि उपज मंडी प्रांगण में “तिलहन कृषक मेला सह सम्मेलन” का आयोजन किया गया। नेशनल मिशन ऑन एडिबल ऑयल के अंतर्गत कृषि कार्यालय द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्व, आपदा प्रबंधन, पुनर्वास एवं उच्च शिक्षा मंत्री टंकराम वर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य पर अग्रसर हैं। इस दिशा में दलहन-तिलहन का अधिक उत्पादन देश को खाद्य तेल के आयात से मुक्ति दिलाएगा और आर्थिक आत्मनिर्भरता मजबूत करेगा। टंकराम वर्मा ने कृषि, पशुपालन, उद्यानिकी एवं मत्स्य विभाग द्वारा लगाए गए प्रदर्शनी स्टॉलों का अवलोकन करते हुए हितग्राहियों, महिला स्व-सहायता समूहों और विभागीय अधिकारियों से उत्पादों एवं तकनीकों की जानकारी ली। उन्होंने किसानों को नई कृषि तकनीकें अपनाने, मृदा परीक्षण शिविरों में भाग लेने तथा कीटनाशकों के सुरक्षित उपयोग की अपील की। उन्होंने यह भी कहा कि सारंगढ़ क्षेत्र की मिट्टी तिलहन उत्पादन के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है। तिलहन नगदी फसल है, जिससे किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में सरकार किसानों के लिए घोषित अधिकांश वादों को पूरा कर चुकी है, जिनमें भूमिहीन कृषकों को 10 हजार रुपये की सहायता राशि एक प्रमुख उपलब्धि है। कार्यक्रम में जांजगीर-चांपा सांसद कमलेश जांगड़े, जिला पंचायत अध्यक्ष संजय भूषण पांडेय एवं कलेक्टर डॉ. संजय कन्नौजे सहित अन्य जनप्रतिनिधियों ने भी किसानों को संबोधित किया। समारोह में उत्कृष्ट कार्य करने वाले किसानों और हितग्राहियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया तथा अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट किए गए। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक आंजनेय वार्ष्णेय, अपर कलेक्टर प्रकाश सर्वे, पूर्व विधायक केराबाई मनहर तथा कृषि, मत्स्य, उद्यानिकी एवं पशुधन विभाग के अधिकारी उपस्थित थे।

छत्तीसगढ़ महतारी की पीड़ा और अस्मिता का सवाल?

अस्मिता की रक्षा सिर्फ उत्सवों से नहीं, बल्कि सम्मान और सजगता से

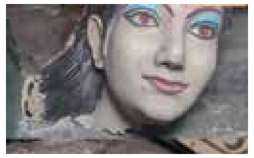

रायपुर में छत्तीसगढ़ राज्योत्सव की तैयारियों के बीच घटित एक घटना ने पूरे प्रदेश के मन में गहरा आघात पहुंचाया है। छत्तीसगढ़ महतारी की मूर्ति का खंडित होना केवल एक प्रतिमा के टूटने की खबर नहीं है, बल्कि यह छत्तीसगढ़ की आत्मा को झकझोर देने वाली घटना है। जिस धरती ने "अरपा पैरी के धार, महानदी हे अपार..." जैसे राज्य गीत से अपनी पहचान बनाई, वहां उसकी जननी के प्रतीक के अपमान ने भावनाओं को आंदोलित कर दिया है। राज्य निर्माण के रजत जयंती वर्ष में यह घटना एक चेतावनी की तरह सामने आई है कि अस्मिता की रक्षा सिर्फ उत्सवों से नहीं, बल्कि सम्मान और सजगता से होती है। रायपुर में छत्तीसगढ़ महतारी की मूर्ति का खंडित होना मानो प्रदेश के गौरव पर सीधा प्रहार था। यह वही 'महतारी' है जो हर छत्तीसगढ़िया के दिल में मातृस्वरूप बसती है। खेतों में मेहनत करते किसान से लेकर लोक कलाकार, मितानिन, छात्र—हर कोई उसकी गोद में पलता है। जैसे ही यह खबर फैली, पूरे प्रदेश में आक्रोश फैल गया। छत्तीसगढ़िया क्रांति सेना ने मौके पर पहुंचकर विरोध प्रदर्शन किया। हालात इतने तनावपूर्ण हो गए कि पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच झड़प तक की नौबत आ गई। हालांकि प्रशासन ने तुरंत कार्रवाई करते हुए मूर्ति को दोबारा स्थापित किया और आरोपी मनोज सतनामी को गिरफ्तार भी कर लिया। बताया गया कि वह मानसिक रूप से अस्वस्थ है, लेकिन इससे जनता के गुस्से में कोई कमी नहीं आई। रायपुर के तेलीबांधा तालाब के पास स्थित छत्तीसगढ़ महतारी उद्यान में छत्तीसगढ़ महतारी की मुख्य प्रतिमा स्थापित है। इसका अनावरण 2022 में तत्कालीन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने किया था। यहीं से 33 जिलों में इसी तरह की प्रतिमाएं लगाने की घोषणा हुई थी। प्रतिमा में मातृ स्वरूपा महिला को पारंपरिक छत्तीसगढ़ी परिधान-लुगरा और आभूषणों में दर्शाया गया है। उनके एक हाथ में धान की बालियां हैं जो राज्य की कृषि प्रधान संस्कृति का प्रतीक है। दूसरे हाथ में दीपक (दीया) ज्ञान, शांति और समृद्धि का प्रतीक है। सिर पर मुकुट, चेहरे पर तेज और मुद्रा में मातृत्व तथा गौरव की झलक दिखती है।

राजनीति ने भी थाम ली कमान

ऐसे हर भावनात्मक मुद्दे की तरह, इस घटना ने भी राजनीति को सुलगा दिया। छत्तीसगढ़िया क्रांति सेना और कांग्रेस ने इसे भाजपा सरकार के खिलाफ अस्मिता का मुद्दा बना दिया। पार्टी नेताओं ने कहा कि भाजपा की सरकार आने के बाद छत्तीसगढ़ की अस्मिता और संस्कृति पर लगातार हमले हो रहे हैं। मामले में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि जिसने ने भी इस घटना को अंजाम दिया है, उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा। केंद्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू ने कहा कि जिसने भी छत्तीसगढ़ माता की मूर्ति तोड़ी है, उनके मन में द्वेष की भावना है। यह मामला सरकार के संज्ञान में है और कड़ी कार्रवाई की जाएगी। वहीं पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने कहा कि भाजपा ने यदि जन आक्रोश को अनदेखा किया तो अच्छा नहीं होगा। वहीं दूसरी ओर भाजपा समर्थक संगठन बजरंग दल ने अपराधी को कठोर दंड देने की मांग की और उसका मुंडन कर जुलूस निकालने की बात कही। उन्होंने यह भी प्रस्ताव रखा कि आगे से 36 फीट ऊंची छत्तीसगढ़ महतारी की मूर्ति स्थापित की जाए ताकि कोई फिर ऐसी हिमाकत न कर सके। एनएसयूआई ने इस घटना को भावनात्मक और सांस्कृतिक दोनों स्तरों पर जोड़ते हुए राज्य गीत 'अरपा पैरी के धार' को हर सार्वजनिक स्थल पर बजाने की मांग की। उनका कहना था कि "यह गीत सिर्फ संगीत नहीं, छत्तीसगढ़ की आत्मा की ध्वनि है।" राज्य निर्माण दिवस के अवसर पर इस गीत को सरकारी और गैर-सरकारी कार्यक्रमों में अनिवार्य रूप से गाने का प्रस्ताव उन्होंने मुख्यमंत्री को सौंपा। यह भी सच है कि ऐसी घटनाएं अक्सर राजनीतिक रंग ले लेती हैं। हर पक्ष अपने हिसाब से अस्मिता की व्याख्या करता है, परंतु असली चुनौती यही है कि अस्मिता को दलगत चश्मे से नहीं देखा जाए। चाहे कांग्रेस हो या भाजपा, बजरंग दल हो या एनएसयूआई सबकी आवाज़ अगर छत्तीसगढ़ की गरिमा के लिए उठ रही है, तो यह प्रदेश के लिए शुभ संकेत है। लेकिन इसे प्रतिस्पर्धा की जगह सहयोग की भावना से देखा जाना चाहिए। छत्तीसगढ़ महतारी का अर्थ मातृत्व है और मातृत्व हमेशा जोड़ता है, तोड़ता नहीं। यह घटना हमें यही सिखाती है कि अस्मिता की रक्षा राजनीतिक प्रतिशोध से नहीं, सामूहिक चेतना से होती है।

राज्य गीत: अस्मिता का स्वर

आज जब इस राज्य गीत को सम्मान देने की मांग उठ रही है, तो यह केवल एक प्रशासनिक निर्णय का सवाल नहीं, बल्कि प्रदेश के मनोभावों का प्रतीक है। जिस तरह राष्ट्रगान सुनते ही सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है, उसी तरह "अरपा पैरी के धार" की पंक्तियां सुनते ही हर छत्तीसगढ़िया के भीतर की भावनाएं उमड़ पड़ती हैं। छत्तीसगढ़ का राज्य गीत 'अरपा पैरी के धार...' सुप्रसिद्ध कवि डॉ. नरेंद्र देव वर्मा द्वारा रचित है। वे छत्तीसगढ़ के भिलाई क्षेत्र से थे और प्रदेश की माटी, नदियों और संस्कृति के अद्भुत चितेरे माने जाते हैं। राज्य निर्माण के कई साल बाद छत्तीसगढ़ की पहचान के प्रतीक रूप में अपनाया गया। गीत में अरपा और पैरी नदियों का उल्लेख है, जो प्रदेश की जीवनरेखा हैं। इसमें धरती की उर्वरता, लोकसंस्कृति की आत्मीयता और मेहनतकश जनजीवन की छवि उभरती है। छत्तीसगढ़ महतारी की गोद में बसे जनजीवन का गर्वपूर्ण चित्रण करती हैं। यह गीत न केवल सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है, बल्कि इसे हर सरकारी आयोजन और राज्योत्सव में सामूहिक रूप से गाया जाता है। डॉ. नरेंद्र देव वर्मा का यह सृजन आज भी छत्तीसगढ़ की अस्मिता और मातृभूमि के प्रति श्रद्धा का सर्वोच्च प्रतीक माना जाता है। यह गीत न सिर्फ भूगोल का वर्णन करता है, बल्कि छत्तीसगढ़ की आत्मा, उसकी मिट्टी, नदी, खेत, लोक और संस्कृति की एकता को सजीव करता है।

अस्मिता का मर्म और समाज की भूमिका

यह समझना जरूरी है कि किसी भी राज्य की अस्मिता मूर्तियों या नारों में नहीं, बल्कि नागरिकों की संवेदना में बसती है। जब समाज अपने प्रतीकों का सम्मान करता है, तब वह संस्कृति जीवित रहती है। छत्तीसगढ़ महतारी की मूर्ति का खंडित होना हमें यही याद दिलाता है कि प्रतीक तभी तक जीवित हैं जब तक हम उनमें अपनी आस्था बनाए रखें। राज्योत्सव केवल जश्न का पर्व नहीं है, यह आत्ममंथन का अवसर भी है कि क्या हमने उन मूल्यों की रक्षा की है, जिन पर यह राज्य बना था? छत्तीसगढ़ के निर्माण की भावना `स्वाभिमान, श्रम और संस्कृति' की त्रयी पर आधारित थी। आज जब हम रजत जयंती मना रहे हैं, तो जरूरी है कि हम इन तीनों मूल्यों को फिर से अपने जीवन का हिस्सा बनाएं।

संवेदना से संस्कार तक

मनोज सतनामी के मानसिक रूप से अस्वस्थ होने की जानकारी मिलने के बाद भी जनता का गुस्सा यह दिखाता है कि भावनाएं कितनी गहरी हैं। लेकिन एक सभ्य समाज में गुस्से से ज़्यादा जरूरी है संयम। अगर हम हर बार अस्मिता के सवाल पर हिंसा या तोड़फोड़ का रास्ता अपनाएंगे, तो हम उसी मातृभूमि के संस्कारों को आहत करेंगे जिसकी रक्षा का दावा करते हैं। असली श्रद्धांजलि यही होगी कि हम इस घटना को प्रतीक बनाकर अपने भीतर सांस्कृतिक अनुशासन पैदा करें, जहां मातृभूमि के हर प्रतीक को श्रद्धा मिले और हर नागरिक अपने भीतर छत्तीसगढ़ महतारी की छवि संजोए। रजत जयंती के अवसर पर जब प्रदेश रोशनी और संगीत से सजेगा, तब यह घटना हमें यह याद दिलाएगी कि असली रोशनी भीतर की जागरूकता से आती है। आइए, हम सब मिलकर प्रण लें कि चाहे कोई भी विचारधारा हो, अस्मिता पर कोई समझौता नहीं होगा। छत्तीसगढ़ महतारी की जय केवल नारे में नहीं, हमारे व्यवहार में दिखनी चाहिए। जब हर नागरिक अपने कर्म से राज्य की गरिमा को बढ़ाएगा, तभी "अरपा पैरी के धार" की धारा सचमुच महानदी की तरह अविरल बहेगी और छत्तीसगढ़ महतारी मुस्कुराएगी। क्योंकि "महतारी केवल मूर्ति नहीं, वह हमारी मिट्टी की आत्मा है। उसका सम्मान ही असली राज्योत्सव है, बाकी सब बस आयोजन है।"

शबाब पर चुनावी शोर

बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए और महागठबंधन के नेताओं ने प्रचार में झोंकी ताकत

बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर एनडीए और महागठबंधन के नेता जोर-शोर से प्रचार अभियान में जुटे हैं। दोनों पक्ष एक-दूसरे पर तीखे आरोप-प्रत्यारोप कर रहे हैं। प्रचार के दौरान, दोनों प्रमुख गठबंधनों के नेताओं के बीच कानून-व्यवस्था, बेरोजगारी, पलायन, बिहार में विकास और अन्य प्रमुख मुद्दों पर आरोप-प्रत्यारोप लगाने का सिलसिला जारी है। भारतीय जनता पार्टी, जनता दल (यूनाइटेड), राष्ट्रीय जनता दल और कांग्रेस समेत विभिन्न दलों के नेता और स्टार प्रचारक प्रचार अभियान में जुटे हुए हैं। जन सुराज, राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी और बहुजन समाज पार्टी ने भी चुनाव प्रचार तेज कर दिया है। जनता दल यूनाइटेड के अध्यक्ष और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने नडीए उम्मीदवारों के समर्थन में कई जनसभाओं को संबोधित किया। भाजपा के वरिष्ठ नेता और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी छपरा, मुजफ्फरपुर, बेगुसराय जैसी जगहों पर चुनावी रैली कर चुके हैं। महागठबंधन के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार तेजस्वी प्रसाद यादव भी अपने निर्वाचन क्षेत्र समेत कई निर्वाचन क्षेत्रों में चुनावी रैलियां कर रहे हैं। तेजस्वी नई घोषणाएं कर रहे हैं तो एनडीए इसे झूठ बता रही है। कांग्रेस ने फर्स्ट फेज के चुनाव प्रचार के लिए स्टार प्रचारकों की लिस्ट जारी कर दी है, जिसमें मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी समेत 40 नेताओं के नाम शामिल हैं। कांग्रेस ने बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के प्रथम चरण के लिए स्टार प्रचारकों के नामों की घोषणा कर दी है। मल्लिकार्जुन खड़गे, सोनिया गांधी, राहुल गांधी, केसी वेणुगोपाल, प्रियंका गांधी वाड्रा, सुखविंदर सिंह सुक्खू, अशोक गहलोत, भूपेश बघेल, दिग्विजय सिंह और अधीर रंजन चौधरी बिहार में कांग्रेस प्रत्याशियों के पक्ष में चुनाव प्रचार करेंगे।

राजनीतिक दलों को नए चेहरों पर भरोसा

18वीं बिहार विधानसभा के लिए दो चरणों में चुनाव 6 और 11 नवंबर को होंगे। पहले चरण में 18 जिलों की 121 सीटों और दूसरे चरण में 20 जिलों की 122 सीटों पर मतदान होगा। इन दोनों चरणों में कुल 2616 उम्मीदवार मैदान में हैं, जिनमें 1085 प्रत्याशी यानी करीब 41% पहली बार चुनाव लड़ रहे हैं। इनमें विभिन्न छोटे दलों और निर्दलीय उम्मीदवार भी शामिल हैं। राजनीतिक दलों ने इस बार नए चेहरों पर भरोसा जताया है। भाजपा ने लोकगायिका मैथिली ठाकुर को अलीनगर से, राजद ने पूर्व मुख्यमंत्री दारोगा राय की पोती डॉ. करिश्मा राय को परसा से और भोजपुरी स्टार खेसारी लाल यादव को छपरा से टिकट दिया है। जेडीयू ने इस्लामपुर से पूर्व विधायक राजीव रंजन के बेटे रोहेल रंजन, जन सुराज ने कर्पूरी ठाकुर की पोती जागृति ठाकुर (मोरवा), हाईकोर्ट के सीनियर एडवोकेट वाई.वी. गिरि (मांझी), गणितज्ञ के.सी. सिन्हा (कुम्हरार) और भोजपुरी गायक रितेश पांडेय (करगहर) को मैदान में उतारा है। रालोमा ने उपेंद्र कुशवाहा की पत्नी स्नेह लता (सासाराम) और लोजपा (आर) ने चिराग पासवान के भांजे सीमांत मृणाल (गरखा) को टिकट दिया है। हम ने पूर्व मंत्री अनिल कुमार के भतीजे रोमित कुमार को प्रत्याशी बनाया है। ये उम्मीदवार पहली बार विधानसभा या लोकसभा का चुनाव लड़ रहे हैं। राज्यसभा या विधान परिषद के सदस्य भी नहीं रहे हैं। राजनीतिक दलों ने विनिबिलिटी फैक्टर (जीतने की संभावना) को ध्यान में रखते हुए नए चेहरों पर दांव लगाया है। अब देखना यह है कि अनुभवहीन उम्मीदवार विधानसभा की दहलीज पार कर पाते हैं या नहीं।

खूब चल रहे दावों के दांव, आरोपों के तीर

महागठबंधन के मुख्यमंत्री चेहरे तेजस्वी यादव ने पंचायत प्रतिनिधियों और विभिन्न समाजिक वर्गों के लिए कई अहम घोषणाएं कीं। उन्होंने आश्वासन दिया कि यदि उनकी पार्टी सत्ता में आती है, तो त्रिस्तरीय पंचायत प्रतिनिधियों का मानदेय दोगुना किया जाएगा। इसके साथ ही पूर्व पंचायत प्रतिनिधियों को पेंशन की सुविधा दी जाएगी और उन्हें 50 लाख रुपये तक का बीमा कवर प्रदान किया जाएगा। तेजस्वी यादव ने पीडीएस डीलरों के मानदेय में भी बढ़ोतरी का वादा किया। इसके अलावा नाई, कुम्हार और लौहार समुदाय के लोगों को पांच वर्षों में पांच लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने की बात कही। इसी बीच कांग्रेस नेता अशोक गहलोत ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को आड़े हाथों लिया। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार ने पाला बदल-बदलकर अपनी छवि खराब की है। अब रोजगार के लिए युवा बहुत दुखी है। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा है कि हमने समाज के सभी वर्गों के लोगों के हित में कार्य किया है। राज्य में प्रेम, भाईचारे एवं शांति का वातावरण है। लगातार 20 वर्षों से विकास कार्यों में लगे रहने का परिणाम है कि आज बिहार प्रगति के नये आयाम स्थापित कर रहा है। आने वाले समय में बिहार देश के सबसे विकसित राज्यों में शुमार होगा। हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (सेक्युलर) के सुप्रीमो जीतन राम मांझी ने कहा है कि एनडीए सरकार बनाएगा, लेकिन अगर कुछ अप्रत्याशित परिस्थितियों में वे सरकार बना भी लेते हैं, तो वे अपने वादे पूरे नहीं करेंगे और कहेंगे कि केंद्र सरकार ने सारा पैसा खर्च कर दिया और उन्हें कुछ नहीं दिए। बिहार के लोग राजनीतिक रूप से जागरूक हैं और इस बार उनके जाल में नहीं फंसेंगे। चिराग पासवान ने कहा कि चुनावों के दौरान विपक्ष अक्सर यह झूठ फैलाने की कोशिश करता है कि मुख्यमंत्री नाराज हैं। जदयू और लोजपा के बीच मनमुटाव है, लेकिन तेजस्वी यादव जानते हैं कि वह सत्ता में नहीं आएंगे। एक बात तो तय है, 14 नवंबर को हम मजबूत और बड़ी जीत के साथ सरकार बनाएंगे। इस बार हम 2010 का भी रिकॉर्ड तोड़ेंगे। पीएम नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि पूरे बिहार का संदेश है कि फिर एक बार एनडीए सरकार, फिर एक बार सुशासन की सरकार। उन्होंने आगे कहा कि आपने हमेशा मोदी पर भरोसा किया है, नीतीश जी पर आशीर्वाद बरसाया है। एनडीए के लिए लिए आपका यही प्यार, आपका अटल विश्वास, अब बिहार को विकास के नए दौर की तरफ ले जा रहा है। पीएम मोदी ने कहा कि हमने जंगलराज को सुशासन में बदला है। अब सुशासन को समृद्धि में बदलने का समय है। बिहार की आने वाली पीढ़ियों के लिए समृद्ध बिहार बनाना है।

जेडीयू ने 11 बागियों को दिखाया बाहर का रास्ता

बिहार विधानसभा चुनाव से पहले जेडीयू ने एक बड़ा फैसला लिया है और अपने 4 पूर्व विधायकों समेत 11 नेताओं को पार्टी विरोधी गतिविधियों में शामिल होने के आरोप में निष्कासित कर दिया है। पार्टी ने जिन लोगों को निष्कासित किया, उसमें पूर्व मंत्री शैलेश कुमार, पूर्व विधान पार्षद संजय प्रसाद, पूर्व विधायक श्याम बहादुर सिंह, पूर्व विधान पार्षद रणविजय सिंह, पूर्व विधायक सुदर्शन कुमार, अमर कुमार सिंह के अलावा महुआ से जदयू की प्रत्याशी रहीं आस्मां परवीन, लव कुमार, आशा सुमन, दिव्यांशु भारद्वाज और विवेक शुक्ला शामिल हैं।

एनडीए और इंडी अलायंस की स्थिति

गठबंधन के तौर पर देखा जाए तो एनडीए ने 243 सीट में 23% यानी 56 उम्मीदवारों को पहली बार चुनावी मैदान में उतारा है। वहीं, महागठबंधन ने 243 की जगह 255 उम्मीदवार को टिकट दिया। महागठबंधन के 12 सीटों पर फ्रेंडली फाइट है। इन 255 उम्मीदवारों में 37% यानी 92 प्रत्याशियों को पहली बार चुनावी समर में उतारा है। जन सुराज ने 90% यानी 218 को, ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम 26 में 18 यानी 69 प्रतिशत को पहली बार चुनाव लड़ा रही है। जन सुराज ने 90% (218) नए चेहरों को टिकट दिया है।

7.43 करोड़ मतदाता लिखेंगे प्रत्याशियों की तकदीर

बिहार विधानसभा चुनाव कार्यक्रम की घोषणा हो चुकी है। चुनाव आयोग ने इस बार मतदान दो चरणों में करवाने का फैसला किया है। पहले चरण में 121, जबकि दूसरे चरण में 122 सीटों पर वोटिंग होगी। बिहार में सामान्य की 203, SC श्रेणी की 38 जबकि एसटी श्रेणी की 2 सीटें हैं। पहले चरण का मतदान 6 नवंबर, जबकि दूसरे चरण में वोटिंग 11 नवंबर को होगी। नतीजों के लिए 14 नवंबर का इंतज़ार करना होगा, जिस दिन वोटों की गिनती होगी। चुनाव आयोग के मुताबिक बिहार में कुल 7.43 करोड़ मतदाता हैं। इनमें करीब 3.92 करोड़ पुरुष, 3.50 करोड़ महिला और 1,725 ट्रांसजेंडर मतदाता शामिल हैं। ये सभी आंकड़े 30 सितंबर 2025 तक के हैं।

बिजली के 25 बरस

दुर्ग रीजन में भिलाई की चमक से हर गांव के रोशन होने तक का सफर

माया चंद्राकर

दुर्ग जिला जो अविभाजित मध्यप्रदेश में सबसे महत्वपूर्ण माने जाने वाला जिला था, अपनी पहचान मुख्य रुप से भिलाई इस्पात संयंत्र के कारण बना चुका था। यह संयंत्र न केवल भारत के औद्योगिक मानचित्र पर एक चमकता सितारा था, बल्कि इसने दुर्ग-भिलाई के शहरी और अर्धशहरी क्षेत्रों को शुरुआती दौर में ही भरपूर बिजली और आधुनिकता दी। हालाकि इस औद्योगिक चमक के नीचे एक विरोधाभास छिपा था कि शहरों में जहाँ बिजली की बहुतायत थी, वहीं अविभाजित दुर्ग जिले जिसमें बालोद एवं बेमेतरा जिला भी शामिल था, के कई दूर-दराज गाँव अभी भी बिजली की पहुंच से दूर थे और जिन क्षेत्रों में बिजली थी जैसे कि पाटन, बालोद, बेमेतरा, साजा एवं बेरला और आसपास के गांव भी लो-वोल्टेज, ओवरलोडिंग एवं विद्युत कटौती की अत्याधिक गंभीर समस्याओं से त्रस्त थे। इस बिजली संकट का सबसे गहरा असर कृषक वर्ग पर पड़ा। दुर्ग क्षेत्र जो कृशि प्रधान है, के किसानों को कृशि पंप चलाने में भारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। वर्ष 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य गठन के बाद से 2025 तक का सफर दुर्ग रीजन (दुर्ग, बालोद, बेमेतरा जिले) के लिए बिजली के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन का काल रहा। इन 25 वर्षों में छत्तीसगढ़ स्टेट पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड (CSPDCL) के तहत वितरण नेटवर्क के विस्तार, आधुनिकीकरण और उपभोक्ताओं को बेहतर सेवा देने की दिशा में तेजी से प्रगति हुई है। केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं, जैसे कि राजीव गांधी ग्रामीण राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना (RGGVY) और दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (DDUGJY) ने दुर्ग रीजन के विद्युतीकरण को गति प्रदान की। राज्य गठन के बाद सिर्फ गांव तक बिजली पहुंचाना ही नहीं, बल्कि सौभाग्य योजना के अंतर्गत हर घर को कनेक्शन मिलना भी सुनिश्चित किया गया, जिसके परिणामस्वरुप वर्तमान स्थिति में दुर्ग रीजन(दुर्ग, बालोद, बेमेतरा जिला) में घरेलू बिजली कनेक्शन की दर लगभग 100 प्रतिशत है। वर्श 2000 से सितंबर 2025 तक बिजली वितरण में हुई उल्लेखनीय वृद्धि - वर्ष 2000 से सितंबर 2025 तक के बिजली वितरण नेटवर्क के विस्तार और क्षमता में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। निम्न आंकड़ा इस अवधि में हुए तीव्र बुनियादी ढांचे के विकास और विद्युतीकरण के सफल प्रयासों को उजागर करता है।

एचटी उपभोक्ताओं की संख्या 83 से बढ़कर 656

नेटवर्क विस्तार से न केवल घरेलू उपभोक्ताओं को लाभ मिला बल्कि कृषि और औद्योगिक क्षेत्र भी मजबूत हुए। कृषि पंपों की संख्या 06 गुणा से अधिक (19615 से 1,21,355) बढ़ी है, जो कृषि क्षेत्र के विद्युतीकरण पर विशेष ध्यान केंद्रित किए जाने का प्रमाण है। रीजन में उच्च दाब (एचटी) उपभोक्ताओं की संख्या इन 25 वर्षों में 83 से बढ़कर 656 हो गई। औद्योगिक विकास और शहरीकरण की बढ़ती गति को बनाए रखने के लिए सीएसपीडीसीएल ने लाइनों के रखरखाव और निर्माण पर जोर दिया, जिससे उद्योगों को लगभग चौबीस घंटे सातों दिन बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित हो सके। एलटी उपभोक्ताओं की संख्या 355312 से लगभग ढाई गुणा बढ़कर 981735 हो गई। आज की तारीख में एलटी उपभोक्ताओं को वार्षिक 2010.23 करोड़ एवं एचटी उपभोक्ताओं को 1539.12 करोड़ की बिजली बेची जा रही है। वितरण ट्रांसफार्मरों और 33/11 केवी उपकेन्द्रों की संख्या में क्रमश: 07 गुणा से अधिक और 05 गुणा की वृद्धि हुई है, जो नेटवर्क की क्षमता और विश्वसनीयता में बड़े सुधार को दर्शाती है। 33 केवी और एलटी लाईनों की लंबाई में लगभग 04 गुणा की वृद्धि हुई है, जिससे दूर-दराज के क्षेत्रों तक बिजली पहुंचना संभव हुआ है।

सोलर रूफटॉप सिस्टम लगाने का चलन बढ़ा

वर्ष 2025 तक, दुर्ग की बिजली व्यवस्था अब केवल पारंपरिक स्रोतों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि नवीकरणीय ऊर्जा की ओर भी बढ़ रही है। सरकार द्वारा दी जा रही सब्सिडी के कारण घरों और व्यवसायों में ``प्रधानमंत्री सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना'' के तहत सोलर रूफटॉप सिस्टम लगाने का चलन बढ़ रहा है। दुर्ग जिले का यह सफर, भिलाई की औद्योगिक रोशनी से शुरु होकर हर गांव के घर को रोशन करने तक, भारत की विकास यात्रा का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह सफर स्पष्ट रुप से दर्शाता है कि राज्य निर्माण के शुरुआती वर्षों में जहाँ बिजली को हर घर तक पहुँचाने पर जोर था, वहीं बाद के वर्षों में आपूर्ति की गुणवत्ता, विश्वसनीयता और उपभोक्ता सेवाओं को बेहतर बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। स्मार्ट मीटर, ऑनलाइन सेवाएं और सौर ऊर्जा की ओर रुझान, यह दर्शाता है कि दुर्ग की बिजली व्यवस्था एक आधुनिक, कुशल और भविष्य के लिए तैयार ग्रिड की दिशा में अग्रसर है।

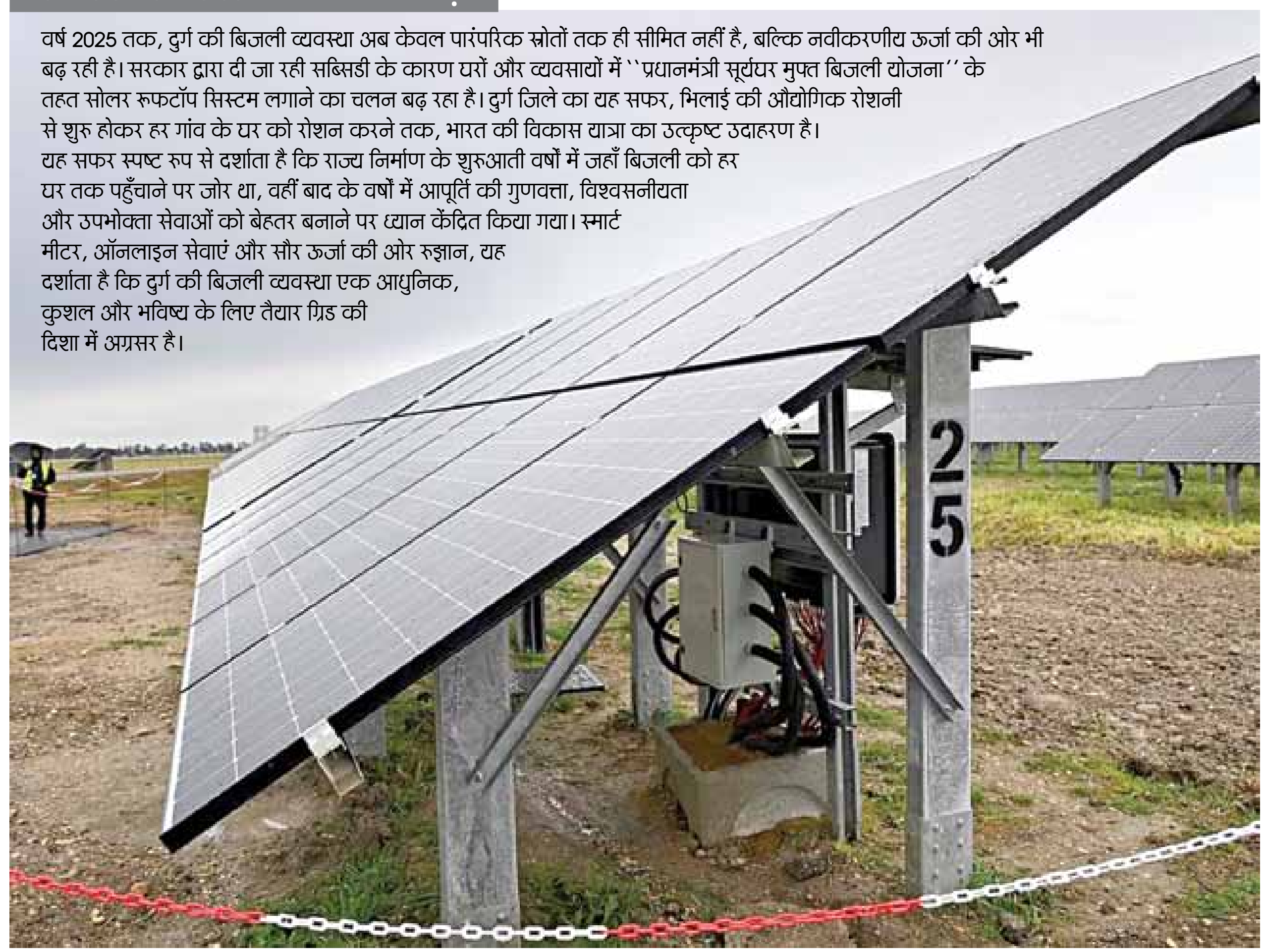

विवरण	वर्ष 2000	वर्ष 2025 सितंबर	वृद्धि
वितरण ट्रांसफार्मरों की संख्या	4787	34367	7 गुणा से अधिक
33 केवी लाईनों की लंबाई	885.32 किमी	3311.50 किमी	लगभग 4 गुणा
11 केवी लाईनों की लंबाई	4758.22 किमी	15842.45 किमी	03 गुणा से अधिक
33/11 केवी उपकेन्द्रों की संख्या	39	195	5 गुणा
अति उच्चदाब केंद्रों की संख्या	03	19	06 गुणा से अधिक
कृशि पंपों की संख्या	19615	121355	06 गुणा से अधिक
एलटी लाईनों की लंबाई	9460 किमी	36715.25 किमी	लगभग 4 गुणा
कुल विद्युतीकृत गांव	-	1760 (सभी ग्राम)	शत-प्रतिशत
संभाग	05	09	लगभग दोगुनी
उपसंभाग	12	19	वृद्धि
वितरण केंद्र	43	62	वृद्धि
कुल उच्चदाब कनेक्शन	83	660	लगभग 08 गुणा
कुल निम्नदाब कनेक्शन	355312	987708	लगभग ढाई गुणा

डिजिटल हुई सेवाएं

डिजिटल सेवाएं प्रदान करने में भी बिजली कंपनी ने तरक्की की है। बिजली बिल का भुगतान, नए कनेक्शन के लिए आवेदन और शिकायत निवारण जैसी सेवाएं पूरी तरह से डिजिटल हो गई हैं, जिससे उपभोक्ताओं को बिजली विभाग के कार्यालयों में जाने की आवश्यकता कम हो गई है।

1760 ग्रामों का विद्युतीकरण

दुर्ग, बालोद एवं बेमेतरा जिले के सभी 1760 ग्रामों का विद्युतीकरण हो चुका है, जो इस अवधि की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि है। संभाग, उपसंभाग और वितरण केंद्रों की संख्या में भी वृद्धि हुई है, जो बढ़े हुए नेटवर्क के कुशल प्रबंधन को सुनिश्चित करने के लिए प्रशासनिक ढांचे के विस्तार को दर्शाता है। यह आंकड़ा स्पष्ट रूप से बिजली वितरण के क्षेत्र में एक बड़ी छलांग को दर्शाता है, जिससे अधिक उपभोक्ताओं तक गुणवत्तापूर्ण बिजली की पहुंच संभव हुई है। पिछले एक दशक में, रीजन में बिजली के क्षेत्र में सबसे बड़ा बदलाव तकनीकी आधुनिकीकरण और उपभोक्ता-केंद्रित सेवाओं के रूप में आया है। हाल के वर्षों में स्मार्ट मीटर लगाने की परियोजना एक बड़ा कदम है। भारत सरकार की आरडीएसएस योजना के तहत, ये स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को बिजली की खपत की सटीक जानकारी "मोर बिजली" ऐप के माध्यम से हर आधे घंटे में उपलब्ध करा रहे हैं। इससे बिलिंग में पारदर्शिता आई है और मानवीय त्रुटियां कम हुई हैं। यह उपभोक्ताओं को अपनी बिजली खपत को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने में भी मदद करता है।

(लेखिका छत्तीसगढ़ स्टेट डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी दुर्ग रीजन की प्रकाशन अधिकारी हैं)

सफर अभी खत्म नहीं हुआ..!

दमदार बल्लेबाजी कर रोहित शर्मा और विराट कोहली ने संन्यास की संभावनाओं पर लगाया विराम

बहुत मशहूर शेर है कि 'सफर अभी खत्म नहीं हुआ, अभी कुछ और कहानियां बाकी हैं' कुछ ऐसी ही कहानी है क्रिकेट टीम इंडिया के दो दिग्गज बल्लेबाज रोहित शर्मा और विराट कोहली की। भारतीय क्रिकेट के ये दोनों स्तंभ अपने करियर के अंतिम पड़ाव पर हैं। दोनों दिग्गज बल्लेबाजों ने वनडे से संन्यास लेने को लेकर चल रही अटकलों पर फिलहाल पूरी तरह से विराम लगा दिया है।

ऑस्ट्रेलिया दौरे की वनडे सीरीज में दोनों खिलाड़ियों के संन्यास के एलान की संभावना जताई जा रही थी। हालांकि, ऐसा नहीं हुआ। भारत अगली वनडे सीरीज दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खेलेगा। नवंबर के अंत में दक्षिण अफ्रीका की टीम भारत का दौरा करेगी। पहला मुकाबला रांची में 30 नवंबर को खेला जाएगा जबकि दूसरा और तीसरा मैच क्रमश: 3 और 6 दिसंबर को खेला जाएगा। प्रशंसकों को उम्मीद है कि रोहित और विराट इस सीरीज में एक बार फिर खेलते नजर आएंगे। तमाम आलोचनाओं और संभावनाओं को ठेंगा बताते हुए रोहित शर्मा ने ऑस्ट्रेलिया में शानदार बल्लेबाजी करते हुए प्लेयर ऑफ द सीरीज का खिताब अपने नाम किया। विराट कोहली ने शुरुआती दो वनडे में फेल होने के बाद तीसरे वनडे में दमदार बल्लेबाजी की। इन दोनों ने अपनी आलोचनाओं का मुंह बंद किया और बल्ले से जवाब दिया। हालांकि, दोनों का भविष्य क्या है इस पर फैसला एक सीरीज के बाद होगा। चैंपियंस ट्रॉफी के बाद रोहित शर्मा और विराट कोहली ने इंटरनेशनल क्रिकेट में वापसी की थी. दोनों ने टी20 और टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लिया है. ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे सीरीज के पहले दो मैच में विराट कोहली बिना खाता खोले वापस लौटे थे। आखिरी मैच में 69 रन की नाबाद पारी खेली. रोहित शर्मा ने पहले वनडे में 8 रन बनाए थे जबकि दूसरे मुकाबले में 73 रन की पारी खेली।

आखिरी मैच में 120 रन की नाबाद पारी खेल टीम को जीत तक पहुंचाया। रोहित शर्मा की धमाकेदार सेंचुरी और विराट कोहली की दमदार फिफ्टी के दम पर भारत ने आखिरी वनडे में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 9 विकेट से जीत दर्ज की। सीरीज के लगातार दो मुकाबले जीतकर भारत 0-2 से पीछे था लेकिन अब 1-2 के नतीजे के साथ लौटेगा। अब कंगारू धरती पर बतौर विदेशी बल्लेबाज सबसे ज्यादा वनडे शतक लगाने का रिकॉर्ड रोहित शर्मा के नाम है। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया में 33 पारियों में 6वां शतक जड़ा, जबकि विराट कोहली और कुमार संगकारा 5-5 शतकों के साथ अब पीछे छूट गए हैं। रोहित शर्मा ने अपनी 33वीं वनडे सेंचुरी के साथ आलोचकों को करारा जवाब दे डाला है। ऑस्ट्रेलिया दौरे में आने से पहले रोहित की उम्र, उनके भविष्य को लेकर कई बातचीत हो रही थी। लेकिन अब उन्होंने बता दिया कि वह 2027 में होने वाले वर्ल्ड कप के लिए पूरी तरह तैयार हैं। पिछले मैच में दोनों खिलाड़ियों के खराब प्रदर्शन के बाद ट्रोलर्स ने सोशल मीडिया पर उन्हें निशाना बनाया था। लेकिन इस मैच में रोहित शर्मा ने न सिर्फ सेंचुरी लगाई बल्कि 'प्लेयर ऑफ द मैच' का खिताब भी अपने नाम किया। वहीं विराट कोहली ने अपने अनुभव से टीम को जीत दिलाई। जिसके बाद फैंस भी उनके समर्थन में उतर आए। एक यूजर ने लिखा कि रोहित और विराट ने हमेशा टीम इंडिया को मुश्किल वक्त में संभाला है, आज की साझेदारी वाकई ऐतिहासिक थी। मैच के बाद एक्टर सुनील शेट्टी ने एक्स पर एक इमोशनल पोस्ट करते हुए लिखा कि यह अजीब है कि हम कितनी जल्दी भूल जाते हैं, रिकॉर्ड, संघर्ष, गर्व, आंसू और बलिदान।

दो मैच और अचानक हर कोई आलोचक बन गया। लेकिन उन्होंने शोर सुना, कुछ कहा नहीं, बस अपने बल्ले से जवाब दिया, क्योंकि वो लेजेंड्स हैं, विराट और रोहित। सुनील शेट्टी का यह पोस्ट सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो गया।

सिडनी में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ रोहित शर्मा

2008 में 66*(87)
2016 में 99 (108)
2025 में 121*(125)

वनडे में सबसे ज्यादा 150+ साझेदारियां

12 तेंदुलकर और गांगुली
12 रोहित और कोहली
7 दिलशान और संगकारा

वनडे और टी20 में सबसे ज्यादा रन

18437 विराट कोहली*
18436 सचिन तेंदुलकर
15616 कुमार संगकारा
15589 रोहित शर्मा*
14143 महेला जयवर्धने
14105 रिकी पोंटिंग

ऑस्ट्रेलिया में मेहमान बल्लेबाज का सबसे ज्यादा शतक

6 रोहित शर्मा (33 पारी)
5 विराट कोहली (32)
5 कुमार संगकारा (49)

विरोधी टीम के खिलाफ सबसे ज्यादा वनडे शतक

10 विराट कोहली बनाम श्रीलंका
9 विराट कोहली बनाम वेस्टइंडीज
9 सचिन तेंदुलकर बनाम ऑस्ट्रेलिया
9 रोहित शर्मा बनाम ऑस्ट्रेलिया

सबसे ज्यादा 100+ साझेदारियां

99 सचिन तेंदुलकर
82 विराट कोहली *
72 रिकी पोंटिंग
68 रोहित शर्मा *
67 कुमार संगकारा

वनडे में सबसे ज्यादा 100+ साझेदारियां

26 तेंदुलकर - गांगुली (176 पारी)
20 दिलशान - संगकारा (108)
19 रोहित - कोहली (101) *
18 रोहित - शिखर (117)

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे में सबसे ज्यादा 50+ स्कोरर खिलाड़ी

24* - विराट कोहली (भारत)
24 - सचिन तेंदुलकर (भारत)
23 - विव रिचर्ड्स (वेस्टइंडीज)
19 - रोहित शर्मा (भारत)
19 - डेसमंड हेन्स (वेस्टइंडीज)

...तो खेल सकते हैं विजय हजारे ट्रॉफी

इस सीरीज से पहले कई मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया था कि रोहित और विराट दोनों की ये आखिरी सीरीज हो सकती है। इसके अलावा दोनों अब सिर्फ वनडे खेलते हैं ऐसे में दोनों के पास गेम टाइम ज्यादा नहीं रहता है। इस बार में जब टीम के कप्तान शुभमन गिल से सवाल किया गया तो उन्होंने जवाब दिया कि अभी तक इस बारे में कोई बात नहीं हुई है। साउथ अफ्रीका सीरीज में ज्यादा गैप नहीं है। साउथ अफ्रीका और न्यूजीलैंड सीरीज के बीच में ज्यादा गैप है। साउथ अफ्रीका सीरीज के बाद इस पर चर्चा की जाएगी। गिल ने साफ तो नहीं कहा है, लेकिन दोनों ही बल्लेबाजों से विजय हजारे ट्रॉफी खेलने को कहा जा सकता है। साउथ अफ्रीका सीरीज के बाद विजय हजारे ट्रॉफी की शुरुआत 24 दिसंबर से हो रही है और फाइनल 18 जनवरी को खेला जाएगा। इसी बीच भारत और न्यूजीलैंड के बीच तीन मैचों की वनडे सीरीज की शुरुआत 11 जनवरी से होगी। ऐसे में सीरीज के लिए तैयारी के लिए रोहित और कोहली से विजय हजारे ट्रॉफी में खेलने को कहा जा सकता है।

रोहित का ऐतिहासिक शतक

सिडनी में खेले गए आखिरी वनडे मैच में रोहित शर्मा ने नाबाद 121 रन की पारी खेली। इस दौरान 125 गेंद का सामना किया और 13 चौके और तीन छक्के उड़ाए। वहीं, विराट कोहली ने 81 गेंद पर नाबाद 74 रन की पारी खेली। इस दौरान सात चौके जड़े। विजयी चौका भी विराट कोहली के बल्ले से निकला। इस जीत के साथ ही विराट और रोहित ने कई रिकॉर्ड अपने नाम कर लिए। रोहित शर्मा ने अपने वनडे करियर की 33वीं और कुल 50वां शतक जड़ा। इसके अलावा रोहित शर्मा, सचिन तेंदुलकर के बाद ऑस्ट्रेलिया में 2500 वनडे रन बनाने वाले दूसरे भारतीय बल्लेबाज बने। रोहित शर्मा वनडे सबसे ज्यादा सिक्स लगाने के मामले में दूसरे स्थान पर हैं। उनके नाम 349 सिक्स दर्ज हैं। वह शाहिद अफरीदी का रिकॉर्ड तोड़ने से मजह तीन सिक्स दूर हैं।

मर्डर 'दृश्यम'

पूर्व पति और प्रेमी ने मिलकर महिला को उतारा मौत के घाट और दफना दी लाश

'दृश्यम' एक मलयालम शब्द है, जिसका अर्थ है दृश्य, इंग्लिश में सीनरी। लेकिन एक अजय देवगन और श्रिया शरण की मर्डर की सस्पेंस से लिपटी ये एक ऐसी थ्रिलर मूवी है, जिसने इस शब्द को घर-घर लोकप्रिय कर दिया। खैर, बात 'दृश्यम' वाले मर्डर की, जो कवर्धा जिले के छोटा से गांव कल्याणपुर में हुई। फिल्म देखकर बुने गए अधकचरे प्लान में दो लोगों ने अपने हाथ खून से रंग लिए। लेकिन वे खुद को अजय देवगन की तरह बेगुनाह साबित नहीं कर सके। क्योंकि ऐसा तो सिर्फ फिल्मों में ही होता है। रील लाइफ से रियल लाइफ अलग होती है, ये अब दोनों गुनहगार जेल की सलाखों के पीछे दिन-रात सोच रहे होंगे।

अपराध की ये कथा शुरू होती है कवर्धा जिले के लोहारा इलाके के गांव कल्याणपुर से। इस गांव में रहने वाली 28 साल की ग्वालिन साहू कोर्ट से मिलने वाले भरण-पोषण की राशि लेने के लिए घर से निकली। 18 जुलाई 2024 की सुबह 11 बजे उसने अपने बच्चों और पिता को बताया कि वो कवर्धा जा रही है। ग्वालिन हर महीने भरण-पोषण की राशि लेने के लिए कवर्धा जाती थी और शाम होते-होते लौट आती थी। लेकिन उस रोज वो वापस नहीं लौटी। शाम से रात हो गई और फिर रात से फिर सुबह। ग्वालिन के पिता और परिजन ने सारे परिचित, रिश्तेदार और उसकी सहेलियों के मोबाइल नंबर पर कॉल कर डाले और कुछ लोगों के घर से भी हो आए। लेकिन ग्वालिन कहीं भी नहीं थी। चार दिनों तक ग्वालिन की खोज-ढूंढ जारी रही। फिर 22 जुलाई को कवर्धा जिले के लोहारा थाने में ग्वालिन के गायब होने की रिपोर्ट दर्ज कराई गई। पुलिस ने गुमशुदगी का केस रजिस्टर किया और जांच शुरू कर दी। पुलिस ने जांच शुरू की तो पता चला कि ग्वालिन साहू की शादी करीब 12 साल पहले साल 2012 में ग्राम चिमागोंदी निवासी लुकेश साहू से हुई थी। इसके बाद दोनों के 3 बच्चे हुए। लेकिन तीन बच्चों के होने के बाद ग्वालिन साहू का गांव के ही राजाराम साहू के साथ प्रेम संबंध हो गया। इसकी वजह से पति-पत्नी में आए दिन विवाद होता रहता था। आखिरकार लुकेश साहू ने पत्नी ग्वालिन साहू को कोर्ट के माध्यम से तलाक दे दिया। कोर्ट ने पत्नी और बच्चों को भरण पोषण के लिए 10 हजार रुपए महीना देना मुकर्रर किया। पति से तलाक लेने के बाद ग्वालिन साहू तीनों बच्चों को लेकर गांव में ही रहने वाले अपने प्रेमी राजाराम साहू के घर पर रहने लगी। लेकिन कुछ दिनों बाद ही राजाराम साहू को लगने लगा कि ग्वालिन साहू का किसी और से भी नाजायज ताल्लुकात है। इसी बात को लेकर उनके बीच भी झगड़ा होने लगा। लिहाजा ग्वालिन अपने बच्चों को लेकर अपने मायके आ गई।

मोबाइल से मिला सुराग

ग्वालिन साहू की तलाश में जुटी पुलिस के शक की सुई सबसे पहले उसके पूर्व पति लुकेश साहू और प्रेमी राजाराम की ओर घूमी। पुलिस ने दोनों को बुलाकर थाने में पूछताछ की, लेकिन वे पुलिस को गुमराह करते रहे। एसपी अभिषेक पल्लव ने लोहारा प्रभारी निरीक्षक लालमन साव को जांच के निर्देश दिए। मृतका के मोबाइल लोकेशन, आईपीडीआर, सीडीआर के आधार पर पूर्व पति लुकेश साहू, प्रेमी राजा राम साहू को तलब कर कडाई से पूछताछ की गई। दोनों पूछताछ में पुलिस को ज्यादा देर गुमराह नहीं कर पाए और हत्या करने की बात कबूल की। पुलिस ने दोनों के मोबाइल के कॉल डिटेल और ग्वालिन के लापता होने वाले दिन की लोकेशन निकलवाई। ग्वालिन साहू के मोबाइल का कॉल डिटेल भी निकलवाया गया। पुलिस को पता चल गया कि 18 जुलाई को लुकेश साहू, राजाराम और ग्वालिन साहू के मोबाइल का लोकेशन एक ही था। पुलिस ने एक बार फिर दोनों को थाने बुलाया और कड़ाई से पूछताछ की। इस बार दोनों टूट गए और कबूल कर लिया कि ग्वालिन साहू का मर्डर उन्होंने ही किया है।

पुलिस को गुमराह करने की कोशिश

ग्वालिन साहू की हत्या करने के बाद आरोपियों ने उसकी लाश को तो दफना दिया। लेकिन उसकी स्कूटी को 20 किलोमीटर दूर कर्रानाला डेम में फेंक दिया। यही नहीं, पुलिस को गुमराह करने के लिए वे रास्ते भर महिला का मोबाइल भी चालू और बंद करते रहे। फिर कई दिन तक मोबाइल इधर-उधर लोकेशन में रखने के बाद उसे भी फेंक दिया। लेकिन आरोपियों की सारी चालाकी धरी रह गई। क्योंकि वारदात वाले दिन आरोपियों के बीच आपस में बात हुई थी। साथ ही वारदात के वक्त तक तीनों के मोबाइल का लोकेशन एक ही था। लिहाजा पुलिस को गुमराह करने की सारी कोशिश फेल हो गई।

22 दिन बाद कब्र से निकाला शव

आरोपी लुकेश और राजाराम ने जब कबूल कर लिया कि ग्वालिन की हत्या उन्होंने ही की है, तो पुलिस उनकी निशानदेही पर उन्हें साथ लेकर लोकेशन तक गई। घोर नक्सली क्षेत्र धानीखूटा के जंगल से कब्र खोदकर ग्वालिन का शव 22 दिन बाद बाहर निकाला गया। पुलिस ने हत्या में इस्तेमाल आरोपी की मोटरसाइकिल के अलावा गैती, फावडा, मृतका की स्कूटी, मृतका की साड़ी, सोने चांदी के जेवर बरामद कर लिए हैं।

प्रेमी और पति की गिरफ्तारी

दोनों आरोपियों लुकेश साहू और राजाराम साहू के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता के 103(1), 61(2)(क), 238(ख) तहत केस रजिस्टर किया। आरोपी पति लुकेश साहू और प्रेमी राजाराम साहू को गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद न्यायिक रिमांड पर दोनों को जेल भेज दिया गया। साइबर सेल प्रभारी निरीक्षक आशीष कंसारी, संतोष मिश्रा, सहसपुर लोहारा थाना प्रभारी, निरीक्षक लालमन साव, एएसआई चंद्रकांत तिवारी, एफएसएल प्रभारी मोहन पटेल, एएसआई आशीष सिंह, बलदाउ भट्ट और थाना सहसपुर लोहारा डॉग स्कवॉड टीम का विशेष योगदान रहा।

ऐसे किया कत्ल

ग्वालिन साहू के बारे में राजाराम को पता था कि वो 18 जुलाई को भरण-पोषण के पैसे लेने के लिए कवर्धा जाने वाली है। लिहाजा उसने कॉल कर उसे मिलने के लिए बुलाया। राजाराम ने ग्वालिन के पूर्व पति लुकेश साहू को भी बुला लिया था। राजाराम ने रात में ग्वालिन साहू को कवर्धा में ही रोक लिया। फिर अगले दिन 19 जुलाई को राजाराम उसे घुमाने के लिए धानीखुटा के जंगल ले गया। जहां पूर्व पति लुकेश साहू भी प्लानिंग के तहत पहले से पहुंच गया था। मौका पाकर प्रेमी ने महिला की गला घोंटकर हत्या कर दी। उसके इस जुर्म में लुकेश ने भी साथ दिया और फिर दोनों ने मिलकर ग्वालिन के शव को जंगल में ही दफना दिया।

इसलिए की हत्या

शादी और तीन बच्चों के बाद जब ग्वालिन साहू अपने प्रेमी राजाराम के संपर्क में आई, तो उसका पति लुकेश काफी नाराज हुआ था। वो राजाराम से भी गुस्सा करता था। लेकिन जब तलाक के बाद ग्वालिन राजाराम के साथ रहने लगी और उसे भी छोड़कर किसी और के संपर्क में आई, तो राजाराम को लुकेश का दुख समझ आया। लुकेश पत्नी के छोड़ देने से ज्यादा हर महीने उसे भरण-पोषण के पैसे देने को लेकर परेशान था। इधर राजाराम ग्वालिन के किसी और के संपर्क में आने से दुखी था। ग्वालिन बार-बार अपने प्रेमी राजाराम को भी फंसाने की धमकी देती थी और बार-बार पैसे मांगती थी। लिहाजा दोनों ने मिलकर ग्वालिन को सबक सिखाने का प्लान किया और फिर हमेशा के लिए उसे मौत की नींद सुलाने का फैसला कर लिया।

मर्डर का 'दृश्यम' कनेक्शन

कवर्धा जिले के लोहारा इलाके में हुए इस सनसनीखेज हत्याकांड का फिल्म 'दृश्यम' से खास कनेक्शन है। अजय देवगन और श्रिया शरण की इस मूवी को राजाराम साहू ने चार बार देखी। वहीं लुकेश ने भी एक बार देखी। इसके अलावा कई क्राइम सीरीज को देखकर आरोपियों ने मर्डर का मास्टरप्लान बनाया। कई बार फिल्म देखकर आरोपियों ने ये तय किया कि हत्या के वक्त मोबाइल बंद रखेंगे। कॉल नहीं करेंगे और इसे हत्या के बाद भी ऑन रखेंगे। साथ ही सभी साक्ष्यों को अलग-अलग जगह फेंककर पुलिस को गुमराह करने की कोशिश भी की। लेकिन वे कामयाब नहीं हुए।

मंत्रालय में आधार आधारित हाजिरी सिस्टम

अधिकारियों और कर्मचारियों को 7 नवंबर तक सेल्फ रजिस्ट्रेशन पूरा करने का निर्देश दिया है

छत्तीसगढ़ सरकार अब कार्यालयों में अनुशासन और पारदर्शिता बढ़ाने के लिए आधार आधारित उपस्थिति प्रणाली लागू करने जा रही है। सामान्य प्रशासन विभाग ने इस संबंध में अधिकारियों को औपचारिक निर्देश जारी कर दिए हैं। इस प्रणाली के तहत जीएडी में कार्यरत सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को अब अपनी हाजिरी आधार कार्ड से सत्यापित करनी होगी। जारी आदेश के मुताबिक यह नई व्यवस्था 1 दिसंबर 2025 से लागू की जाएगी। इससे पहले सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को 7 नवंबर तक सेल्फ रजिस्ट्रेशन पूरा करने का निर्देश दिया गया है। इस प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की लापरवाही या देरी होने पर संबंधित अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई की जा सकती है।

आदेश में कहा गया है कि यह सिस्टम मंत्रालय जीएडी में कार्यरत आईएएस अधिकारियों से लेकर चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों तक सभी पर समान रूप से लागू होगा। प्रत्येक श्रेणी के लिए अलग-अलग कोड भी निर्धारित किए गए हैं, ताकि उपस्थिति के आंकड़े विभागवार और स्तरवार दर्ज किए जा सकें। हाल ही में हुई कलेक्टर कॉन्फ्रेंस के दौरान मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने आधार आधारित बायोमीट्रिक उपस्थिति प्रणाली को तत्काल लागू करने के निर्देश दिए थे। मुख्यमंत्री ने कहा था कि समयपालन और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए यह तकनीकी व्यवस्था जरूरी है। उन्होंने अफसरों को चेतावनी दी थी कि हाजिरी प्रणाली को लेकर किसी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

बढ़ेगी पारदर्शिता और जवाबदेही

आधार आधारित बायोमीट्रिक सिस्टम के लागू होने से अब कर्मचारियों की उपस्थिति का रिकॉर्ड रियल टाइम में अपडेट होगा। इससे न केवल समयपालन में सुधार होगा, बल्कि सरकारी कार्यों की निगरानी भी आसान होगी। पहले जहां कुछ विभागों में मैनुअल उपस्थिति रजिस्टर या कार्ड पंच प्रणाली से कार्य किया जाता था, वहीं अब यह पूरी तरह डिजिटल प्लेटफॉर्म पर होगा।सूत्रों के मुताबिक यह कदम मंत्रालय में अनुशासन और पारदर्शिता बढ़ाने की दिशा में सरकार का बड़ा प्रशासनिक सुधार माना जा रहा है। मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि इस व्यवस्था से "कामचोर संस्कृति" पर लगाम लगेगी और समय पर उपस्थित रहने की आदत विकसित होगी।

डिजिटल गवर्नेंस की दिशा में बड़ा कदम

राज्य सरकार ने हाल के महीनों में ई-ऑफिस, ई-फाइल ट्रैकिंग सिस्टम और डिजिटल पे-रोल जैसी कई पहलें की हैं। अब आधार आधारित हाजिरी प्रणाली इस डिजिटल सुधार श्रृंखला का अगला चरण है।1 दिसंबर से लागू होने जा रही यह व्यवस्था छत्तीसगढ़ मंत्रालय में डिजिटल गवर्नेंस और जवाबदेही का नया अध्याय खोलने जा रही है। आने वाले समय में इसे धीरे-धीरे सभी जिला कार्यालयों और अन्य सरकारी संस्थानों में भी लागू करने की तैयारी है।

घटिया क्वालिटी की दवाई

केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन की रिपोर्ट में 112 दवाएं फेल, छत्तीसगढ़ की 10 दवाओं में खामियां

केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन द्वारा सितंबर 2025 में जारी औषधि गुणवत्ता रिपोर्ट ने देशभर में हड़कंप मचा दिया है। रिपोर्ट के अनुसार, 112 दवाओं के नमूने क्वालिटी टेस्ट में फेल हुए हैं, जबकि एक दवा नकली (Spurious) पाई गई है। चौंकाने वाली बात यह है कि नकली पाई गई यह दवा छत्तीसगढ़ से संबंधित है। राज्य में कुल 10 दवाओं के सैंपल गुणवत्ता मानकों पर खरे नहीं उतर सके हैं। CDSCO और राज्य औषधि प्रयोगशालाओं की संयुक्त जांच में पाया गया कि 52 नमूने केंद्रीय प्रयोगशालाओं में और 60 नमूने राज्य प्रयोगशालाओं में अमानक (NSQ) घोषित किए गए। छत्तीसगढ़ की स्थिति और भी चिंताजनक रही, क्योंकि यहां एल्बेंडाजोल के चार अलग-अलग बैच लगातार फेल पाए गए। यह कृमिनाशक दवा है, जिसका निर्माण एएफएफवाई पैरेंटेरल्स (AFFY Parenterals) कंपनी द्वारा किया गया था। सभी एल्बेंडाजोल सैंपल डिजोल्यूशन टेस्ट (Dissolution Test) में फेल हुए — यानी दवा शरीर में घुलकर अपेक्षित प्रभाव नहीं डाल रही थी। विशेषज्ञों के अनुसार, ऐसी दवाएं मरीजों के लिए अप्रभावी होने के साथ-साथ नुकसानदेह भी साबित हो सकती हैं। इसी रिपोर्ट में मैकलियोड्स फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड की एक क्रीम — जिसमें क्लोबेटासोल, नियोमाइसिन और माइकोनाजोल को Spurious (नकली) घोषित किया गया है। यह क्रीम फंगल इन्फेक्शन के इलाज में दी जाती है। जांच में पाया गया कि यह उत्पाद असली ब्रांड की नकल कर बनाया गया था और इसे बनाने वाली कंपनी के पास वैध लाइसेंस भी नहीं था।

जांच और कार्रवाई के निर्देश

छत्तीसगढ़ की अन्य दवाओं में भी गंभीर गुणवत्ता दोष मिले हैं। एमोक्सिसलीन टैबलेट (बैच CT2193), जो सर्दी-खांसी और बैक्टीरियल संक्रमण में उपयोग की जाती है, Assay Test में फेल पाई गई। इसका अर्थ है कि दवा में सक्रिय तत्व की मात्रा निर्धारित मानक से कम थी। इसी तरह, HSN बॉयोटेक की पैरासिटामॉल टैबलेट (500 mg), एड केम फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड की एसेक्लोफेनिक-पैरासिटामॉल टैबलेट और स्वेफन फार्मास्युटिकल्स प्राइवेट लिमिटेड की डाइक्लोफैनिक-पैरासिटामॉल टैबलेट भी क्वालिटी टेस्ट में असफल रहीं। इनमें "Assay" और "Misbranded" जैसी श्रेणियों में दोष पाए गए हैं।स्वास्थ्य मंत्रालय ने इस रिपोर्ट को गंभीरता से लेते हुए सभी संबंधित राज्यों को जांच और कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि यह मामला केवल गुणवत्ता नियंत्रण का नहीं, बल्कि जनस्वास्थ्य सुरक्षा का भी है। यदि ऐसी दवाएं मरीजों तक पहुंचती हैं, तो यह सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बन सकती हैं।

छह भुजाओं वाली मां दंतेश्वरी

800 साल पुराना दंतेश्वरी मंदिर है करोड़ों भक्तों की आस्था और विश्वास का केंद्र

छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा का दंतेश्वरी मंदिर देश के 52 शक्तिपीठों में से एक है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार जब विष्णु भगवान ने अपने चक्र से सती के शरीर को 52 भागों में विभक्त किया था, तो उनके शरीर के 51 अंग देशभर के विभिन्न हिस्सों में गिरे। 52 वां अंग उनका दांत यहां गिरा था। इसलिए देवी का नाम दंतेश्वरी और जिस ग्राम में दांत गिरा था उसका नाम दंतेवाड़ा पड़ा। बदलते वक्त के साथ मंदिर की तस्वीर भी बदलती गई। लेकिन मां दंतेश्वरी का अपने भक्तों पर आशीर्वाद ऐसा रहा कि लोगों की आस्था और विश्वास समय के साथ बढ़ता गया। नवरात्र पर दंतेवाड़ा में चारों ओर मां दंतेश्वरी के भक्तों का रेला लगता है।

कोई जमीन पर लोटते हुए नारियल लेकर पहुंचता है, तो कोई मन्नत की चुनरी लेकर, कोई आशीर्वाद से अभिभूत होकर आता है। आदिकाल से मां दंतेश्वरी को बस्तर के लोग अपनी कुल देवी के रूप में पूजते हैं। ऐसा माना जाता है कि, बस्तर में होने वाला कोई भी विधान माता की अनुमति के बगैर नहीं किया जाता है। इसके अलावा तेलंगाना के कुछ जिले और महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले के लोग भी मां दंतेश्वरी को अपनी इष्ट देवी मानते हैं। वहां के लोग भी बताते हैं कि काकतीय राजवंश जब यहां आ रहे थे तब हम कुछ लोग वहां रह गए थे। वैसे तो मां दंतेश्वरी बस्तर की इष्ट देवी हैं। लेकिन अब हर जाति, सम्प्रदाय के लोग माता को मानने लगे हैं। हम भी मां दंतेश्वरी को अपनी इष्ट देवी के रूप में पूजते हैं।

6 भुजाओं वाली है मां दंतेश्वरी की प्रतिमा

डाकिनी और शाकिनी नदी के संगम पर स्थित मां दंतेश्वरी मंदिर में स्थापित देवी दंतेश्वरी बस्तर क्षेत्र के चालुक्य राजाओं की कुल देवी थीं। इन्होंने ही इस मंदिर की स्थापना की थी। जिसका गर्भगृह करीब आठ सौ साल से भी पुराना है। चार भागों में विभाजित इस मंदिर का निर्माण द्रविड़ शैली में हुआ था। इस मंदिर के अवयवों में गर्भगृह, महा मंडप, मुख्य मंडप और सभा मंडप शामिल हैं। गर्भगृह और महामंडप का निर्माण पत्थरों से किया गया है। गर्भगृह में स्थापित 6 भुजाओं वाली माता दंतेश्वरी की प्रतिमा ग्रेनाइट पत्थर से निर्मित है। देवी ने दाईं ओर की भुजा में देवी ने शंख, खड्ग और त्रिशूल धारण कर रखे हैं, जबकि बाईं ओर देवी के हाथों में घंटी, पद्म और राक्षसों के बाल हैं। प्रतिमा के ऊपरी भाग में भगवान नरसिंह अंकित हैं। इसके अलावा देवी की प्रतिमा के ऊपर चांदी का एक छत्र है।

हर साल होती है तीन नवरात्र

देश के सारे शक्तिपीठों में जहां हर साल चैत्र और शारदीय दो नवरात्र मनाए जाते हैं। लेकिन ये बात बहुत कम लोग ही जानते हैं कि दंतेवाड़ा ऐसी जगह है जहां साल में दो नहीं, तीन नवरात्र मनाए जाते हैं। आमतौर पर सभी जगह चैत्र और शारदीय दो नवरात्र मनाए जाते हैं, लेकिन यहां हिंदी कैलेंडर के मुताबिक फागुन के महीने में यहां फागुन नवरात्र होता है। स्थानीय भाषा में इसे फागुन मड़ई भी कहते हैं। फागुन मड़ई के दौरान भी 9 दिनों तक नवरात्र की तरह विधि-विधान से दंतेश्वरी देवी की पूजा अर्चना की जाती है।

जब मंदिर से बाहर निकलती हैं देवी

दंतेश्वरी मंदिर शायद देश की इकलौती ऐसी देवी मंदिर है, जहां की देवी साल में एक बार मंदिर से बाहर भी निकलती हैं। बस्तर दशहरा में शामिल होने के लिए मां दंतेश्वरी मंदिर से बाहर निकलतीं हैं। बस्तर दशहरा पूरे विश्व में विख्यात है, जहां रावण का दहन नहीं किया जाता। बल्कि रथ निकाली जाती है और ये नगर परिक्रमा करती है। विश्व प्रसिद्ध बस्तर दशहरा पर्व में शामिल होने हर साल शारदीय नवरात्र की पंचमी पर आराध्य देवी मां दंतेश्वरी को निमंत्रण देने के लिए बस्तर के राज परिवार के सदस्य मंदिर पहुंचते हैं। यह प्रथा सदियों से चली आ रही है। अष्टमी पर माता अपने भक्तों को आशीर्वाद देने मंदिर से निकलती हैं। माता के छत्र और डोली को बस्तर दशहरा में ले जाया जाएगा। इस दौरान जगह-जगह माता की डोली और छत्र का भव्य रूप से स्वागत किया जाता है। जब तक दंतेश्वरी माता दशहरा में शामिल नहीं होती हैं, तब तक यहां दशहरा नहीं मनाया जाता है। करीब 610 साल पुरानी बस्तर दशहरा की रस्में 75 दिनों तक चलती है।

देवी के बाद करें भैरव बाबा के दर्शन

गर्भगृह के बाहर दोनों तरफ मां दंतेश्वरी के अंगरक्षक भैरव बाबा की दो बड़ी मूर्तियां हैं। चार भुजाओं वाली इन मूर्तियों के बारे में कहा जाता है कि देवी दर्शन करने के बाद भैरव बाबा के दर्शन करना जरूरी है। ऐसी मान्यता है कि भक्त भैरव बाबा को प्रसन्न कर लें तो वे उनकी मुराद माता तक पहुंचा देते हैं और उनकी मनोकामना जल्दी पूरी हो जाती है।

मन्नत पूरी करता है गरुण स्तंभ

सदियों पहले यहां गंगवंशीय और नागवंशीय राजाओं का राजपाठ था। फिर काकतीय वंश यहां के राजा बने। जितने भी राजा थे उनमें कोई देवी की उपासना करता था तो कोई शिवजी का भक्त था। कुछ विष्णु भगवान के भी भक्त हुआ करते थे। जिन्होंने मंदिर के मुख्य द्वार के सामने गरुड़ स्तंभ की स्थापना करवाई। गरुड़ स्तंभ के बारे में कहा जाता है कि इस स्तंभ को जो भी अपने दोनों हाथों में समा ले और उसके दोनों हाथों की उंगलियां आपस में मिल जाएं तो उसकी मन्नत पूरी होती है।

सरई और सागौन से बना मंदिर का स्ट्रक्चर

सैकड़ों साल पहले जब दंतेश्वरी मंदिर स्थापित हुआ तो उस समय सिर्फ गर्भगृह ही था। मंदिर जैसा कुछ नहीं था, बाकी का पूरा हिस्सा खुला था। आसपास कोई और स्ट्रक्चर नहीं था। लेकिन जैसे-जैसे बस्तर राज परिवार के राजा बदले तो उन्होंने अपनी आस्था के अनुसार मंदिर का स्वरूप भी बदला। लेकिन मंदिर के गर्भगृह से कभी कोई छेड़खानी नहीं की गई। गर्भगृह स्थित मां दंतेश्वरी देवी की मूर्ति ग्रेनाइट पत्थरों से बनी है। फिलहाल जो मंदिर है, उसके बाहर का हिस्सा बस्तर की रानी प्रफुल्लकुमारी देवी ने बनवाया था। ये बेशकीमती इमारती लकड़ी सरई और सागौन से बना हुआ है। आज अपने इस अनोखे स्वरूप के साथ दंतेश्वरी मंदिर भव्य रूप ले चुका है।

ऐसे पहुंचें दंतेवाड़ा

दंतेवाड़ा पहुंचने के लिए रायपुर और विशाखापट्टनम निकटतम प्रमुख हवाई अड्डे हैं। ये दोनों जगह जिले मुख्यालय दंतेवाड़ा से सड़क मार्ग दूरी करीब 400 किलोमीटर हैं। जगदलपुर निकटतम मिनी हवाई अड्डा है जिसमें रायपुर और विशाखापट्टनम दोनों के साथ उड़ान कनेक्टिविटी है। विशाखापट्टनम जिला मुख्यालय दंतेवाड़ा से ट्रेन से जुड़ा हुआ है। विशाखापट्टनम और दंतेवाड़ा के बीच दो दैनिक ट्रेनें उपलब्ध हैं। इसके अलावा रायपुर और दंतेवाड़ा के बीच नियमित लग्जरी बस सेवाएं उपलब्ध हैं। दंतेवाड़ा नियमित बस सेवाओं के माध्यम से हैदराबाद और विशाखापट्टनम से भी जुड़ा हुआ है। ओडिशा, तेलंगाना, और महाराष्ट्र के भक्तों के लिए भी राह आसान है। ओडिशा के भक्त पहले जगदलपुर, तेलंगाना के सुकमा और महाराष्ट्र के बीजापुर जिला होते हुए सीधे दंतेवाड़ा पहुंच सकते हैं। ये तीनों जिले दंतेवाड़ा के पड़ोसी जिले हैं।

साइलेंट हार्ट अटैक और कार्डियोफोबिया

कहीं आपको भी तो नहीं लगता है हार्ट अटैक आने का डर

डर को अंग्रेजी में फोबिया कहा जाता है। फोबिया एक तरह की मानसिक समस्या है जिसमें व्यक्ति को किसी न किसी चीज का डर सताता रहता है। हम में से हर किसी को किसी न किसी चीज का डर सताता है। चाहें वो पानी से जुड़ा फोबिया हो या ऊंचाई से। फोबिया कई प्रकार के हाते हैं, आज हम जिस फोबिया के बारे में बात कर रहे हैं वो है कार्डियोफोबिया। कार्डियो का मतलब है दिल से संबंधित और फोबिया का मतलब है डर लगना यानी दिल से जुड़ी बीमारी जैसे हार्ट अटैक आने और इसकी वजह से मरने का भय होना होता है। कार्डियोफोबिया एक प्रकार का डर है जिसमें व्यक्ति को दिल का दौरा पड़ने और इससे मरने का डर सताता है। जिसकी वजह से व्यक्ति को अगर सीने में थोड़ा सा भी दर्द उठता है तो उसके दिमाग में सबसे पहले ये ही डर खटकता है कि कहीं उसे दिल का दौरा तो नहीं पड़ा। आइए जानते हैं इस फोबिया के के बारे में।

लक्षण

कार्डियोफोबिया के मरीजों में एंग्जाइटी के कारण लक्षण नजर आते हैं। ज्यादा गौर पड़ने पर एंग्जाइटी लक्षण बढ़ा सकती है। चक्कर आना। दलि की धड़कन तेज होना। हाइपरटेंशन की समस्या। पसीना आना। बेहोशी आना। कंपकंपी होना आदी। सारे टेस्ट के बाद भी अगर आपको लग रहा है तो आपको हार्ट की डसीज है तो ये कार्डियोफोबिया के लक्षण हो सकते हैं।

इलाज

कार्डियोफोबिया के इलाज के लिए साइकोलॉजसि्ट से मिलें। हार्ट की अच्छी सेहत सुनश्चिति करने के लिए आप साल में दो बार चेकअप करवा सकते हैं इससे आपको भी हार्ट की बीमारी होने का डर नहीं रहेगा। डीप ब्रीदगिं एक्सरसाइज और मेडटिेशन की सहायता लेनी चाहिए।

क्या है साइलेंट हार्ट अटैक

साइलेंट हार्ट अटैक में कई बार यह समझ ही नहीं आता कि ये हार्ट अटैक है। कई बार इसे लक्षण तक नजर नहीं आते और अचानक से आदमी दर्द से बैचेन हो उठता है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि साइलेंट अटैक ज्यादा खतरनाक होते हैं। इसलिए अटैक के सभी लक्षणों के बारे में जानना बहुत जरूरी होता है। कई बार सीने में होने वाले दर्द या बेचैनी को हम या तो इग्नोर कर देते हैं या उसे किसी अन्य समस्या का कारण मान बैठते हैं। ये नजरअंदाजी ही कई बार जानलेवा साबित हो जाती है। इसलिए जरूरी है कि अटैक आने के कारण, लक्षण और बचने के उपाय को जरूर जाना जाए। शरीर में ब्लड के जरिए ऑक्सीजन कोने-कोने में जाती हैं लेकिन इसे पहुंचाने का काम हार्ट करता है। लेकिन कई बार कोलेस्ट्रॉल के रूप में फैट हार्ट की धमनियों में ऐसा जमा होने लगता है कि ब्लड सर्कुलेशन रुकने लगता है। इससे हार्ट को या तो ज्यादा दुगनी गति से पंप करना पड़ता है या हार्ट पर इतना दबाव पड़ता है कि वो फेल हो जाता है। कुछ सेकंड्स में यदि स्थित सामान्य न हो तो आदमी की मौत हो जाती है।

दिल तक नहीं पहुंचता ऑक्सीजन

जब शरीर में कोलेस्ट्रॉल बढ़ने लगता है तो ब्लड़ भी गाढ़ा होने लगता है। इससे धमनियों में ब्लड सर्कुलेशन सही तरीके से नहीं हो पाता। धमिनियों में प्लाक जमने से ये ब्लॉक होने लगती हैं। इससे ब्लड का फ्लो सही नहीं होता। हालांकि कोलेस्ट्रॉल बढ़ने का संकेत शरीर दे रहा होता है। जब आपको सीने में दर्द महसूस हो, बेचैनी या दिल की धड़कन अचानक से तेज हो जाए तो समझ लें कि कुछ न कुछ शरीर में गड़बड़ी हो रही है। क्योंकि इन समस्याओं का सीधा असर हार्ट पर ही पड़ता है।

इसलिए पता नहीं चलता

कई बार ब्रेन तक दर्द का अहसास पहुंचाने वाली नसों या स्पाइनल कॉर्ड में प्रॉब्लम के कारण या फिर साइकोलॉजिकल कारणों से व्यक्ति दर्द की पहचान नहीं कर पाता। इसके अलावा ज्यादा उम्र वाले या डायबिटीज के पेशेंट्स में ऑटोनॉमिक न्यूरोपैथी के कारण भी दर्द का अहसास नहीं होता है।

5 लक्षण

1. गैस्ट्रिक प्रॉब्लम, पेट की खराबी
2. बिना वजह सुस्ती और कमजोरी
3. थोड़ी सी मेहनत में थकान लगना
4. अचानक ठंडा पसीना आना
5. बार-बार सांस फूलना

5 कारण

1. ज्यादा ऑयली, फैटी और प्रोसेस्ड फूड
2. फिजिकल एक्टिविटी न करना
3. शराब और सिगरेट पीना
4. डायबिटीज और मोटापा
5. स्ट्रेस और टेंशन

5 उपाय बचाव के

1. डाइट में सलाद, वेजिटेबल्स, ज्यादा शामिल करें
2. रेगुलर वॉक, एक्सरसाइज, योगासन करें
3. सिगरेट, शराब जैसे नशे से दूर रहें
4. खुश रहें। स्ट्रेस और टेंशन से बचें
5. रेगुलर मेडिकल चेक-अप करवाएं

खबर खास

छत्तीसगढ़ में 4708 पदों पर होगी भर्ती

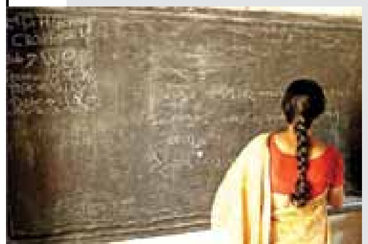

लंबे इंतजार के बाद छत्तीसगढ़ सरकार ने शिक्षक भर्ती की प्रक्रिया शुरू कर दी है। स्कूल शिक्षा विभाग ने 4708 शिक्षकों की भर्ती के लिए औपचारिक आदेश जारी कर दिया है। कुल 5000 पदों में से पहले चरण में ये भर्तियां की जाएंगी। विभाग को वित्त विभाग से हरी झंडी मिलने के बाद यह कदम उठाया गया है। इसके लिए विभाग के अवर सचिव ने डीपीआई को पत्र भेजा है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कुछ महीने पहले सुशासन तिहार के दौरान धमतरी में शिक्षकों की नई भर्ती का ऐलान किया था। उसी घोषणा के अनुरूप पहले चरण में 5000 शिक्षकों की नियुक्ति की जा रही है। सरकार का लक्ष्य आगामी सालों में कुल 30 हजार शिक्षकों की भर्ती करना है, ताकि प्रदेश में शिक्षा व्यवस्था को मजबूती मिल सके। स्कूल शिक्षा विभाग के सीनियर अधिकारियों के मुताबिक, इस भर्ती में व्याख्याता, शिक्षक और सहायक शिक्षक तीनों श्रेणियों के पद शामिल होंगे। विभाग ने भर्ती का ड्राफ्ट तैयार कर लिया है। परीक्षा आयोजित करने की जिम्मेदारी छत्तीसगढ़ व्यापम को सौंपी जाएगी। व्यापम परीक्षा कार्यक्रम की घोषणा जल्द करेगा, जिसके बाद ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया शुरू होगी। अधिकारियों का कहना है कि इस बार भर्ती प्रक्रिया को पूर्णतः पारदर्शी और व्यवहारिक बनाया जाएगा। पिछले अनुभवों से सबक लेते हुए, मापदंडों में जरूरी सुधार किए जा रहे हैं ताकि भविष्य में कोई कानूनी विवाद न हो। बता दें कि प्रदेश में 3 साल बाद शिक्षक भर्ती हो रही है। पिछली सरकार के कार्यकाल में 14 हजार पदों की घोषणा हुई थी, जिनमें से करीब 10 हजार शिक्षकों की ही नियुक्ति हो पाई थी। अब नई भर्ती से हजारों युवाओं को रोजगार मिलने की उम्मीद है।

आकाश तिवारी बने रायपुर निगम के नेता प्रतिपक्ष

रायपुर नगर निगम की राजनीति में पिछले 10 महीनों से चल रहा विवाद आखिरकार थम गया है। निगम सभापति सूर्यकांत राठौर ने मंगलवार को आदेश जारी कर आकाश तिवारी को नया नेता प्रतिपक्ष नियुक्त किया है। आकाश तिवारी अब निगम की अगली सामान्य सभा में आधिकारिक रूप से विपक्ष का नेतृत्व करेंगे। पिछले 10 महीनों से नेता प्रतिपक्ष के चयन को लेकर कांग्रेस खेमे में खींचतान चल रही थी। कई दावेदारों के नाम पर चर्चा हुई, लेकिन अंतिम सहमति नहीं बन पा रही थी। आकाश तिवारी के नाम पर मुहर लगते ही निगम की राजनीति में नई हलचल शुरू हो गई है। आकाश तिवारी ने संदीप साहू की जगह ली है, जो पिछले कार्यकाल में इस पद पर थे। नेता प्रतिपक्ष के चयन को लेकर कांग्रेस पार्षदों के बीच पिछले कई महीनों से मतभेद बने हुए थे। आखिरकार संगठन ने आकाश तिवारी के नाम पर भरोसा जताकर इस लंबे विवाद पर विराम लगा दिया है। वहीं, इस फैसले के बाद निगम की राजनीति में नई स्थिति बनती दिख रही है। कई पार्षदों ने आकाश तिवारी की नियुक्ति का स्वागत किया है और उम्मीद जताई है कि अब विपक्ष की आवाज और मजबूती से सदन में गूंजेगी।

निगम जारी करेगा 100 करोड़ का बांड

राज्य सरकार की मंजूरी के बाद रायपुर नगर निगम जल्द ही बांड जारी करने की प्रक्रिया शुरू करेगा। 100 करोड़ के इस बांड के लिए निगम को हर साल साढ़े सात से 8 करोड़ रुपए ब्याज चुकाना होगा। यह ब्याज निवेशकों को

हर छह महीने या साल में चुकाना होगा। तीन या पांच साल बाद बांड की अवधि पूरी होने पर निवेशकों को मूलधन यानी 100 करोड़ रुपए लौटाए जाएंगे। केंद्र सरकार से प्रोत्साहन राशि के रूप में मिलने वाले 13 करोड़ से निगम के लिए पहले साल ब्याज चुकाने का टेंशन नहीं रहेगा। बांड से प्राप्त राशि से शंकरनगर में कमर्शियल काम्पलेक्स बनाया जाएगा। राज्य सरकार ने निगम के बांड को मंजूरी दे दी है। अनुमति पत्र में यह लिखा गया है कि शासन बांड की कोई गारंटी नहीं लेता है। इसे लेकर विवाद खड़ा हो गया है। महापौर मीनल चौबे ने कहा कि सरकार ने नगर निगम के बांड को मंजूरी दी है। नगर निगम अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में सक्षम है। बांड जारी करने के पूर्व नगर निगम ने सभी औपचारिकताएं पूरी की है। सेबी में पंजीयन कराया गया है। वहीं कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि शासन का अपने ही नगर निगम पर विश्वास नहीं है। पूर्व महापौर एजाज ढेबर ने कहा कि कांग्रेस शासनकाल के दौरान की यह पहल हुई थी। यह भविष्यदर्शी कदम था। सरकार जोखिम युक्त समर्थन देने से पीछे हट रही है।

जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र अब पूरी तरह ऑनलाइन

भारत के महारजिस्ट्रार कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2023 में संशोधित ऑनलाइन पोर्टल लॉन्च किया गया है, जिसके माध्यम से राज्य में जन्म एवं मृत्यु प्रमाण पत्र ऑनलाइन बनाए जा रहे हैं। इस प्रकार, छत्तीसगढ़ राज्य में प्रत्येक जन्म एवं मृत्यु प्रमाण पत्र का ऑनलाइन बनाया जाना अनिवार्य किया गया है। उल्लेखनीय है कि जन्म-मृत्यु पंजीकरण अधिनियम, 1969 में वर्ष 2023 में संशोधन किया गया है। संशोधन के अनुसार अक्टूबर 2023 के बाद जन्मे बच्चों की जन्म तिथि प्रमाणित करने के लिए जन्म प्रमाण पत्र ही एकमात्र वैध आधार होगा। अर्थात, इस तिथि के पूर्व जन्मे बच्चों के मामलों में अन्य वैकल्पिक दस्तावेज भी जन्म तिथि के प्रमाण के रूप में मान्य रहेंगे। परंतु अक्टूबर 2023 के बाद जन्मे बच्चों के लिए केवल जन्म प्रमाण पत्र ही तिथि प्रमाण का एकमात्र स्रोत होगा। राज्य में अप्रैल 2023 के बाद से जन्मे प्रत्येक बच्चे के लिए ऑनलाइन जारी जन्म प्रमाण पत्र को ही मान्य किया गया है। अक्टूबर 2023 के पूर्व जन्मे बच्चों के जन्म तिथि प्रमाणन के लिए जन्म प्रमाण पत्र अनिवार्य नहीं है। उनके लिए अन्य दस्तावेज भी मान्य हैं। लेकिन अक्टूबर 2023 के बाद जन्मे बच्चों के लिए जन्म प्रमाण पत्र ही जन्म प्रमाण का एकमात्र आधार होगा। पूर्व में जिन बच्चों का जन्म प्रमाण पत्र मैन्युअल पद्धति से जारी किया गया था, उनके लिए भी अब पोर्टल में ऑनलाइन प्रमाण पत्र बनाने का प्रावधान उपलब्ध है। इससे पुराने प्रमाण पत्र भी डिजिटल स्वरूप में सुरक्षित किए जा सकेंगे।

कृषि विवि के नए कुलसचिव ने पदभार संभाला

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के नवनियुक्त कुलसचिव कपिलदेव दीपक ने पदभार ग्रहण किया. उन्होंने प्रभारी कुलसचिव डॉ सी पी खरे से कुलसचिव पद का प्रभार लिया। पदभार

ग्रहण करने के उपरांत कपिलदेव दीपक ने कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ गिरीश चंदेल से सौजन्य मुलाकात की। डॉ चंदेल ने श्री दीपक को उनके सफल कार्यकाल हेतु शुभकामनाएं दी। श्री कपिल देव दीपक ने विश्वविद्यालय के अधिकारियों से संवाद कर विश्वविद्यालय की कार्यप्रणाली एवं गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर उप कुलसचिव डॉ यमन देवांगन, डॉ श्रीकांत चितले, डॉ विजय सोनी सहित विश्वविद्यालय प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि कपिल देव दीपक मूलतः कृषि विभाग में संयुक्त संचालक के पद पर पदस्थ है।

सन्ना पंडरापाठ में तीरंदाजी अकादमी के लिए एग्रीमेंट

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की उपस्थिति में जशपुर जिले के बगिया स्थित मुख्यमंत्री कैंप कार्यालय में बगीचा विकासखंड अंतर्गत सन्ना पंडरापाठ में तीरंदाजी अकादमी स्थापित करने के लिए जिला प्रशासन और एनटीपीसी के बीच एग्रीमेंट किया गया। एनटीपीसी द्वारा यह परियोजना कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व (CSR) के तहत 20 करोड़ 53 लाख रुपए की लागत से संचालित की जाएगी। इस अवसर पर कलेक्टर श्री रोहित व्यास और एनटीपीसी के अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री बिलाश मोहंती उपस्थित थे। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि एनटीपीसी द्वारा सीएसआर के माध्यम से आर्चरी सेंटर की स्थापना के लिए 20 करोड़ 53 लाख रुपए की राशि प्रदान की जा रही है, यह अत्यंत हर्ष का विषय है। उन्होंने कहा कि जशपुर क्षेत्र के युवाओं में तीरंदाजी के प्रति अपार संभावनाएं हैं, और इस सेंटर के आरंभ होने से उन्हें प्रशिक्षण और संसाधनों की बड़ी सुविधा प्राप्त होगी। सन्ना पंडरापाठ में 10.27 एकड़ भूमि में यह अकादमी स्थापित की जाएगी। यहां आउटडोर तीरंदाजी रेंज, खिलाड़ियों के लिए छात्रावास, स्टाफ क्वार्टर, खिलाड़ियों की सुविधा हेतु भवन, जैविक खेती के लिए छायादार नर्सरी, पुस्तकालय, चिकित्सा केंद्र, कौशल विकास केंद्र, हर्बल वृक्षारोपण तथा प्रशिक्षण मैदान जैसी सुविधाएं विकसित की जाएंगी।

समर्पण, अनुशासन और समय प्रबंधन से मिलती है सफलता

राज्यपाल रमेन डेका कोटा स्थित डॉ. सीवी रमन विश्वविद्यालय के दूसरे दीक्षांत समारोह में शामिल हुए। उन्होंने 195 विद्यार्थियों को पीएचडी को उपाधि और 189 विद्यार्थियों को गोल्ड मेडल प्रदान किया। उन्होंने इस दौरान विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित दीक्षांत स्मारिका सहित अन्य प्रकाशनों का विमोचन किया। अपने प्रेरणादायक उद्बोधन में उन्होंने विद्यार्थियों को समर्पण, अनुशासन और निरंतर परिश्रम को जीवन का मूल मंत्र बताते हुए सफलता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। राज्यपाल रमेन डेका ने कहा कि भाषा ज्ञान का माध्यम है, बाधा नहीं। केवल अंग्रेजी जानने से कोई ज्ञानी नहीं बन जाता। भाषा ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम हो सकती है, लेकिन यह बाधा कभी नहीं बन सकती। उन्होंने कहा कि किसी भी भाषा में सच्चा ज्ञान तभी प्राप्त होता है जब हम उसमें मन, मस्तिष्क और व्यवहार से जुड़ते हैं। राज्यपाल ने दीक्षांत को सिर्फ एक समापन नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत करार दिया। कार्यक्रम में केन्द्रीय आवासन एवं शहरी विकास राज्य मंत्री तोखन साहू, उच्च शिक्षा मंत्री टंकराम वर्मा, बेलतरा विधायक सुशांत शुक्ला, डॉ. सीव्ही रमन विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे, कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार घोष, कुलसचिव डॉ. अरविन्द कुमार तिवारी, आईआईटी भिलाई के निदेशक प्रोफेसर राजीव प्रकाश, आइसेक्ट समूह के सचिव डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी, कलेक्टर संजय अग्रवाल, एसएसपी रजनेश सिंह सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित थे।

जशपुर, बस्तर में 4 नए कॉलेजों के लिए 132 पद स्वीकृत

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की पहल पर छत्तीसगढ़ शासन के उच्च शिक्षा विभाग मंत्रालय ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के बजट में प्रावधानित 4 नवीन शासकीय महाविद्यालयों की स्थापना को स्वीकृति प्रदान कर दी है। उच्च शिक्षा विभाग द्वारा जारी आदेश के अनुसार इन महाविद्यालयों की स्थापना फरसाबहार (जिला-जशपुर), करडेगा (जिला-जशपुर), नगरनार (जिला-बस्तर) तथा किलेपाल (जिला-बस्तर) में की जाएगी। मुख्यमंत्री की इस पहल से जशपुर एवं बस्तर जैसे जनजाति बहुल एवं भौगोलिक रूप से दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यार्थियों को अब उनके इलाके में ही उच्च शिक्षा के अवसर उपलब्ध होंगे। इन चारों महाविद्यालयों के लिए कुल 132 पदों (प्रति महाविद्यालय 33 पद) के सृजन की स्वीकृति के साथ ही कक्षाएं प्रारंभ करने की अनुमति भी राज्य शासन ने दे दी है। स्वीकृत पदों में प्राचार्य, सहायक प्राध्यापक, ग्रंथपाल, क्रीड़ाधिकारी, सहायक ग्रेड-1 एवं प्रयोगशाला कर्मी आदि शामिल हैं। मुख्यमंत्री श्री साय की इस पहल से आदिवासी एवं दूरस्थ क्षेत्रों में उच्च शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा। स्थानीय युवाओं की शिक्षा, रोजगार एवं कौशल वृद्धि के अवसर बढ़ेंगे। प्रदेश में समान और संतुलित शैक्षणिक विकास को गति मिलेगी।

आदि कर्मयोगी अभियान और पीएम जनमन योजना में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

छत्तीसगढ़ ने एक बार फिर राष्ट्रीय पटल पर अपनी सशक्त पहचान दर्ज कराई है। आदि कर्मयोगी अभियान और प्रधानमंत्री जनमन योजना के उत्कृष्ट क्रियान्वयन के लिए राज्य को आज भारत के राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा 'सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले राज्य' के रूप में सम्मानित किया गया। यह सम्मान राजधानी दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया। राज्य सरकार और जनजातीय विकास विभाग की ओर से यह सम्मान प्रमुख सचिव सोनमणि बोरा ने राष्ट्रपति के करकमलों से प्राप्त किया। प्रमुख सचिव सोनमणि बोरा ने इस मौके पर पीएम जनमन योजना और धरती आबा ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत छत्तीसगढ़ में जनजातियों और विशेष रूप से पिछड़ी जनजातियों के विकास के लिए किए जा रहे कार्यो के संबंध में विस्तार से प्रस्तुती दी। वहीं मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी की कलेक्टर श्रीमती तुलिका प्रजापति ने जिलों में जनजातियों के विकास में किए जा रहे कार्यो की जानकारी दी। कार्यक्रम में केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्री श्री जुआल ओराम तथा राज्य मंत्री दुर्गा दास उइके, जनजातीय कार्य मंत्रालय के सचिव विभु नायर भी उपस्थित थे।

बॉलीवुड में विदेशी हुस्न का जलवा

हेलन, नादिरा और मुमताज से लेकर सनी लियोनी और कैटरीना ने अपने हुस्न के दम पर किया बॉलीवुड पर राज

बॉलीवुड में हीरोइन बनने का सपना लेकर हर रोज और हर साल न जाने कितनी लड़कियां मुंबई पहुंचती हैं, लेकिन इनमें से कुछ ही अपने सपने का साकार कर पाती हैं। हिन्दी सिनेमा में अपनी जगह बनाना इतना आसान भी नहीं है। लेकिन बॉलीवुड में कुछ ऐसी भी हीरोइन हैं, जो सात समंदर पार से भारत आई और बॉलीवुड पर राज करने लगीं। विदेशी मूल का होने के बावजूद इन हीरोइंस को फिल्में भी खूब मिलीं और पर्दो पर दर्शकों का प्यार भी भरपूर मिला।

बॉलीवुड इंडस्ट्री आज दुनिया की बड़ी फिल्म इंडस्ट्रियों में गिनी जाती हैं। शायद यही एक वजह है कि यहां पर देश ही नहीं विदेश से भी लोग अभिनय के लिए आते है। जिनमें विदेशी एक्ट्रेसेज एक बड़ा उदाहरण है। आज यहां पर कई ऐसी अभिनेत्रियां हैं जो अपनी एक बड़ी पहचान बनाने के साथ अच्छा पैसा भी कमा रही हैं। 90 से दशक में बनी फिल्मों के गाने में हीरो-हीरोइन के पीछे डांस के लिए पीछे विदेशी लडकियों को रखा जाता था, लेकिन समय बदला और फिर विदेशी मूल की ये हीरोइन ने बॉलीवुड में अपनी एक अलग पहचान बनाने में कामयाब हुईं। विदेशी परवरिश के बाद भी इन एक्ट्रेसेज ने हिंदी फिल्मों में काम करने के लिए अपनी सेकेंड लेंग्वेज पर बहुत काम किया है। इस दौर में विदेशी कलाकारों की बॉलीवुड फिल्मों में एंट्री ज्यादा हो रही है। एशिया के साथ अब यूरोपीय कंट्रीज से भी हिंदी फिल्म इंडस्ट्रीज में काफी एक्ट्रेसेज आ चुकी हैं। डांस क्वीन हेलेन भी विदेशी मूल की म्यांमार से थी और नेपाली मूल की मनीषा कोइराला भी।

एवलिन शर्मा

इंडो-जर्मन एक्ट्रेस एवलिन शर्मा जर्मनी में जन्मी हैं. फिल्म 'ये जवानी है दीवानी' में कैमियो रोल से अपना डेब्यू किया था.

हैलन

अपने जमाने की मशहूर कैबरे डांसर हैलन बर्मा की रहने वाली थीं. दूसरे विश्व युद्ध के दौरान उनका परिवार भारत आकर बस गया था. एक वक्त था जब हर फिल्म में उनका डांस सॉन्ग होना जरूरी माना जाता था. बॉलीवुड ने उन्हें डांस क्वीन का खिताब दिया है.

याना गुप्ता

चेक गणराज्य की याना गुप्ता 'दम' फिल्म में आइटम गर्ल के रूप में सामने आईं थीं.

एमी जैक्सन

इंग्लैंड में पैदा एमी जैक्सन बॉलीवुड में आने से पहले ब्रिटिश फिल्मों में काम करती थी. बॉलीवुड में एमी की पहली फिल्म 'एक था दीवाना' थी. इसके अलावा वह 'सिंह इज ब्लिंग' और 'फ्रीकी अली' इनकी मुख्य फिल्में हैं.

नादिरा

अपने जमाने की मशहूर अभिनेत्री नादिरा को ज्यादातर नेगेटिव रोल में पसंद किया गया. उनके एक्सप्रेशन और अदाएं कमाल की थी. लेकिन शायद की किसी को पता हो कि हिन्दी सिनेमा में छाने वाली नादिरा असल में बगदाद की रहने वाली थी.

मुमताज

70 का दशक मुमताज की खूबसूरती और अदाओं के नाम था, जिसकी दुनिया दीवानी थी. मुमताज मूलतः ईरान की रहने वाली थीं, बाद में उनका परिवार भारत में आकर बस गया. लेकिन शादी के बाद मुमताज लंदन में सेटल हो गई हैं.

लॉरेन गॉटलिब

अमेरिकन डॉन्सर लॉरेन गॉटलिब भी इस लिस्ट का एक पार्ट है। लॉरेन ने फिल्म एनी बड़ी कैन डॉन्स से बॉलीवुड में डेब्यू किया था। इसके बाद वह कई रिएलिटी शो में भी नजर आ चुकी हैं।

सलमा आगा

सलमा आगा का जन्म पाकिस्तान में हुआ था लेकिन उनकी पढ़ाई लिखाई लंदन से हुई. सलमा लंदन से बॉलीवुड में आईं और 'निकाह' फिल्म से बॉलीवुड डेब्यू किया.

कैटरीना कैफ

कैटरीना के पापा कश्मीरी और मां ब्रिटिश हैं. हालांकि उनका जन्म हांगकांग में हुआ था. फिल्म 'बूम' उन्होंने बॉलीवुड डेब्यू किया था. कटरीना ने बॉलीवुड में कदम रखा था तो उन्हें हिंदी बोलने नहीं आती थी. लेकिन उन्होंने हिंदी सीखी अपनी धाक बॉलीवुड में जमा ली. कैटरीना ने 'पार्टनर', 'वेलकम', 'रेस', 'सिंह इज किंग', 'अजब प्रेम की गजब कहानी', राजनीति और एक था टाइगर जैसी कई हिट फिल्में दी हैं.

नरगिस फाखरी

नरगिस फाखरी न्यूयॉर्क में जन्मी हैं और 2011 में इम्तियाज अली की फिल्म 'रॉकस्टार' से उन्होंने अपना बॉलीवुड डेब्यू किया था. इसके बाद वह 'मद्रास कैफे', 'मैं तेरा हीरो' और बैंजो जैसी कई अन्य फिल्मों में वह दिखाई दीं.

सनी लियोनी

बॉलीवुड एक्ट्रेस सनी लियोनी कनाडा में जन्मी हैं. 2012 में फिल्म 'जिस्म 2' से डेब्यू किया था. हालांकि फिल्मों से पहले सनी रियलिटी शो बिग बॉस में शामिल हुई थीं. जिस्म 2 के बाद 'जैकपॉट', 'रागिनी एमएमएस 2', 'मस्तीजादे' सनी की कुछ सुपर हिट फिल्में दी हैं.

ऐसे बढ़ाएं चेहरे का निखार

डार्क सर्कल से लेकर मुहासों तक में फायदेमंद है होममेड ब्यूटी फेस मास्क

हेल्दी और चमकदार स्किन पाना सभी की चाहत होती है और इसके लिए आपको महंगे महंगे सैलून में जा कर महंगे ट्रीटमेंट करवाने की जरूरत नहीं है। आप अपनी रसोई में पाए जाने वाले इंग्रेडिएंट्स की मदद से ही काफी प्रभावी ब्यूटी मास्क बना सकती हैं। यह न केवल सस्ते होते हैं बल्कि हानिकारक केमिकल्स से भी मुक्त होते हैं। इसलिए सेंसिटिव स्किन वाले लोग भी इन मास्क का प्रयोग कर सकते हैं। इस आर्टिकल में आइए ऐसे 5 प्रभावी फेस मास्क के बारे में जानते हैं जो ग्लोइंग स्किन पाने में आपकी मदद कर सकते हैं। हर महिला एक नेचुरल ग्लोइंग और ब्यूटीफुल स्किन पाना चाहती है। मेकअप भले ही कुछ वक्त के लिए आपके चेहरे के दाग-धब्बों व कमियों को छिपा दे, लेकिन क्लीयर स्किन की बात ही कुछ और होती है। यही कारण है कि महिलाएं अपनी स्किन का निखार बरकरार रखने के लिए एक स्किन केयर रूटीन फॉलो करती हैं। जिसमें वह कई तरह के प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करती हैं। हालांकि, सुंदरता का खजाना प्रकृति में ही छिपा है। प्रकृति ने हमें ऐसी कई हर्ब्स दी हैं, जो सेहत के साथ-साथ स्किन के लिए भी गुणकारी है। अगर इन हर्ब्स को स्किन पर अप्लाई किया जाए तो ना केवल आपकी स्किन नेचुरल तरीके से दमकने लगती है, बल्कि स्किन पर मौजूद कील-मुंहासे, डार्क सर्कल्स व दाग-धब्बे भी दूर हो जाते हैं। तो चलिए हम आपको ऐसे ही कुछ होममेड हर्बल फेस मास्क के बारे में बता रहे हैं, जो आपकी स्किन के लिए बेहद लाभदायक साबित हो सकती हैं।

क्या है फेस मास्क?

आमतौर पर फेस क्लीजिंग, एक्सफोलिएशन और फेस मसाज के बाद फेस मास्क का उपयोग किया जाता है। फेस मास्क को चेहरे पर 10 से 15 मिनट तक लगाया जाता है और फेस मास्क में सबसे ज्यादा एलोवेरा, एवोकाडो और मसाज करने वाले तेल का ही उपयोग किया जाता है। अगर आपकी स्किन रूखी और बेजान है तो फेस मास्क आपके स्किन को हाइड्रेट कर देता है। अगर आपकी स्किन ऑयली है तो फेस मास्क आपकी त्वचा से डेडस्किन और अशुद्धियों को निकालने में मदद करता है।

दही और शहद का मास्क

शहद एक प्राकृतिक इंग्रेडिएंट्स है जो स्किन में मॉइश्चर रिटेन करने में मदद करता है और इसमें लैक्टिक एसिड भी होता है जो स्किन को एक्सफोलिएट करता है। इस मास्क को बनाने के लिए आपको दो चम्मच प्लेन दही में एक चम्मच शहद मिला देना है। इस मिश्रण को अब अपने चेहरे पर लगा लें और 15 से 20 मिनट तक छोड़ दें। इसे हल्के गर्म पानी से धो लें और स्किन को ड्राई होने दें। यह आपकी स्किन को मॉइस्चराइज करने के साथ साथ ब्राइट भी करता है।

एवोकाडो और ओटमील मास्क

एवोकाडो में फैटी एसिड होते हैं और ऐसे विटामिन भी होते हैं जो स्किन को नरीश करते हैं। ओटमील स्किन को एक्सफोलिएट करने का काम करता है। आधे एवोकाडो को मैश कर लें और उसमें फाइनली ग्राउंड ओटमील को मिक्स कर लें। इस मिश्रण को चेहरे पर 15 से 20 मिनट लगा लें और फिर धो लें। इससे आपको काफी मॉइश्चराइजिंग और रिजूवनेटिंग प्रभाव मिलते हैं। यह ड्राई और मैच्योर स्किन के लिए काफी लाभदायक है।

हल्दी और नारियल के तेल का मास्क

हल्दी को इसके एंटी इन्फ्लेमेटरी और एंटी ऑक्सीडेंट गुणों के लिए जाना जाता है। नारियल के तेल को हाइड्रेट करने में प्रयोग किया जाता है और यह स्किन को सॉफ्ट भी बनाता है। दोनों चीजों को मिक्स करके एक पेस्ट बना लें और चेहरे पर लगा कर 10 से 15 मिनट के लिए छोड़ दें। इसे आंखों पर न लगाएं। इसे धोएं। इससे आपको ब्राइट स्किन मिलेगी और डल स्किन की समस्या दूर होगी।

एलोवेरा और खीरे का मास्क

एलोवेरा में सूदिंग गुण होते हैं और खीरे को इसके कूलिंग और रिफ्रेसिंग गुणों के लिए जाना जाता है। इन दोनों चीजों को आपस में मिक्स करके एक स्मूद पेस्ट बना लें। इस मिश्रण को चेहरे पर लगा लें और 20 से 30 मिनट के लिए छोड़ दें। इसे ठंडे पानी से धो लें और आपको तुरंत अच्छे रिज़ल्ट देखने को मिलेंगे।

स्ट्रॉबेरी और नींबू के जूस का मास्क

स्ट्रॉबेरी में एंटीऑक्सीडेंट होते हैं और विटामिन सी भी। यह स्किन को ब्राइट करने में मदद करती है। चार स्ट्रॉबेरी को मैश कर लें और उनमें नींबू का रस मिला दें। इसे अपने चेहरे पर 15 मिनट के लिए लगाएं और फिर धो लें। यह डार्क स्पॉट और अन इवन स्किन टोन को सही करने के लिए मास्क अच्छा है।

केसर और गुलाब जल का फेस मास्क

इस फेस मास्क में कई तरह के पौष्टिक तत्व पाए जाते हैं, जिसके प्रभाव से स्किन की कई समस्याओं को कम या नियंत्रित करने में मदद मिलती है। यह फाइन लाइन, मुंहासे, डलनेस आदि दूसरी त्वचा संबंधी समस्याओं में काफी असरदार है। आप इसका उपयोग कर सकती हैं। केसर का फेस मास्क बनाने के लिए आप एक कटोरी में केसर और गुलाब जल डालें और अच्छी तरह से मिला लें। केसर में गुलाब जल डालने के बाद लगभग 10 मिनट तक रख दें ताकि केसर गुलाब जल में अच्छी तरह से मिल जाए। अब इसमें अन्य सामग्रियों यानि एलोवेरा जेल को डाल दें और इसे अच्छी तरह से मिक्स कर लें। बस आपका फेस मास्क तैयार है अब आप इसे लगा सकती हैं। यह फेस मास्क पूरी तरह से प्राकृतिक हैं और इनका त्वचा पर कोई भी साइड इफेक्ट नहीं है। लेकिन फिर भी संवेदनशील त्वचा पर इसके इस्तेमाल से पहले पैच टेस्ट जरूर करें। क्योंकि इसका प्रभाव स्किन टाइप पर निर्भर करता है।

चने की दाल और कच्चे दूध का फेस मास्क

चने की दाल और कच्चे दूध के होममेड फेस पैक बनाने के लिए आप एक कटोरी में चना दाल और कच्चा दूध डालें और कुछ देर के लिए रख दें ताकि दाल अच्छे से दूध में मिल (सोख) जाएं। फिर इस मिश्रण को मिक्सी में डालकर पीस लें और स्मूथ पेस्ट बना लें, जो आपके चेहरे पर आसानी से लग जाएं। अब इसमें अन्य सामग्री यानी एलोवेरा जेल और हल्दी को डाल दें। फिर इसे अच्छे से मिक्स कर लें। इस पैक को लगाने से पहले अपने चेहरे को अच्छे से साफ कर लें और ठंडे पानी से धो लें। फिर इस पैक को 15 मिनट के लिए लगा लें। फिर ठंडे पानी से चेहरे को धोएं और अपनी त्वचा को ड्राई करके मॉइश्चराइजर लगा लें। आपको बता दें कि कच्चा दूध कई स्किन संबंधी समस्याओं के लिए बहुत उपयोगी है और चना दाल, एलोवेरा, हल्दी आदि चीजें स्किन को स्वस्थ रखने का काम करता है।

भोजपुरी फिल्म एक्ट्रेस नेहा मलिक आए दिन अपनी तस्वीरें इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर करती रहती हैं। हाल ही में लेटेस्ट फोटोशूट करवाया है, जिसमें नेहा मलिक ने बोल्ड अंदाज में किलर पोज देते हुए तस्वीरें अपलोड की हैं। इन तस्वीरों में एक्ट्रेस ने रेड कलर की ब्रालेट और ब्लैक शॉट्र्स पहना हुआ है। शर्ट उतारकर खिंचवाई गई इन तस्वीरों में एक्ट्रेस नेहा मलिक अपना रेड बिकिनी फ्लॉन्ट करते नजर आ रही हैं। सोशल मीडिया पर इन तस्वीरों ने धमाल मचा दिया है और नेहा मलिक बेहद ही हॉट लग रही हैं।

HNN
24x7
जूनून सच दिखाने का
TATA sky 1141
airtel 354
SITI 316
TRIDEV 145
GTPL 254
HDS 137
BADRI KEDAR 355
OTT Platform Also
JioTV 1355
dailyhunt